

کرشن لیلا



۱۔ ٹائیٹل — کرشن لیلا

۲۔ صفحہ — ۱۹۲

۳۔ عکس — جنوری سنہ ۱۹۸۲ء

۴۔ کاتب — مصنّف

۵۔ آرٹ تہ حاشیہ — (”)

۷۔ مول (شیٹھ روپیہ) Rs.60/-

۸۔ چھاپ خانہ :-

कृष्ण-लीला

پرنٹرز اینڈ پبلشرز :-

فاضل کاشمیری

ساکنہ گلشن نگر۔ چھانپورہ۔ سرینگر

کشمیر ۱۹۰۰۱۵

شریمد بھگوت گیتا دنیا کی قدیم روحانی کتابوں میں بے نظیر اہمیت رکھتی ہے۔ اس کا

سورگیہ شریمتی مایاونتی بترا
کی سمرتی میں سمرپت۔
(مصنّف)

स्वर्गीया
श्रीमती मायावंती बतरा
की
पुण्य स्मृति में
समर्पित

फाज़िल कश्मीरी



بنوُوم پان ہوٗرلی سوزٕ لوٗرمَس
میٖتٕرلوٗیہ اوٗسس ترٚانگ انگ سازٕ کوٗرمَس
وٗوزُس یس نِش چھیلِتھ زٔھنی مَس کدوٗرت
تُلِتھ زٔنگارٕ نوُٗرک آیہ پوٗرمَس

— - —

شریمد گیتا جی کِس قسم کے فوقُ البشر انسان (سپرمین Superman) پیدا کرنا چاہتی ہے

۵ جو سکھ سے سکھی ہو نہ دکھ سے دکھی۔ نہ خوف اُس کو آئے نہ غصّہ کبھی۔ نہ جد ہوں کے

नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५७॥



नूरुक आयि

वनोवुम पान मोरली सोज़ बोरमस ●

मेच्युव ओसुस त अंग अग साज फोरमस

वोजुस यस निश छलिथ छ'न्यमस कदूरथ

तुलिथ जंगार' नूरुक आयि पोरमस

नोट : नूरुक आयि :— (सूरऐ नूरक आयि, सूरऐ नूर छु कुरानिमजीदुक अख सूरऐ शरीफ)

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा

सुखमक्षयमश्नुते ॥२१॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥ यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्

حرفِ اوّل

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سلسلہ میں یہ کتاب کرشن لیلا میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے ایشور اللہ کی ہمہ گیر بخشش شاملِ حال رہی، جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اس کتاب کی تزئین (Decoration) اور کتابت خود کرنے میں دلی مسرت حاصل ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لیلا" کی تکمیل میں مجھے محترمہ ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ، پروفیسر چمن لال جی سپروؔ اور پنڈت سائلؔ کاشمیری صاحب نے تعاون دیا، اور گنیش مندر پربندھک سمتی سرینگر اور سناتن دھرم پرتاپ سبھا سرینگر نے مالی امداد دی۔ میں نے رسالہ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے کافی فایدہ اٹھایا ہیں ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے ان کی چند خامیوں

* दो शब्द *

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब " कृष्ण लीला " मेरी तीसरी अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि-–शान तामीर करने में मुझें ईश्वर - अल्लाह की हमागीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Decoration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है ।

जेर-इ नजर किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण–भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामी इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा० जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू साहिब और पण्डित पृथ्वी नाथ कोल "साइल–कश्मीरी" और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें "कल्याण" गोरखपुर का नायाब खसूसी "भागतङ्क", और Iscon Books, California, काबिलि जिक्र हैं।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा

کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی۔ میں نے بنیادی طور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا ہے اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اولین سال اسلامیہ سکولوں میں گزارے ہیں اور اردو، عربی اور فارسی کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی کا نقشہ اتارا ہے۔ اس لئے میری کرشن لیلاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخائر کی جھلکیاں ابھرتی ہیں۔ یہ کہنا بے جا نہ ہوگا کہ رگھوپتی سہائے فراق گورکھپوری کے کلام میں جابجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو بہ پہلو ہندی بھاشا کی کرنیں جھلملاتی ہیں جو ایک فطری امر کا آئینہ دار ہے۔ دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت میں شامل ہے۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ نہیں رہ سکتا۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری "کرشن لیلا" پڑھ کر یہ اس کم بھی اندازہ کریں گے کہ لیلا کار فاضل کی شاعری اور خیالات و بیانات کا

करने में कोई झिझक महसूस नहीं होती – मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरबियत के दस अवायली साल इस्लामिया स्कूलों में गुजारे हैं और उर्दू, फारसी और अ'बी के माहिरीन असातिजा उल्माए वक्त से जबान-व-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूरा अलूम के जवाइर को झलकियां उभरती हैं। यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख–पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीब के पहलू-व-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का आईनादार है। दूसरी बात इस हकीकत की निशानदिही है कि " नात " कहना मेरी सिरिश्त में शामिल है — इस लिए रंग और कैफ–-व-गुदाज से भी अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी "कृष्ण-लीला" पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीला-कार फाजिल की शायरी और खयालात और बया-नात का Convas बहुत वसीह है या वह तख-

کنواس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیّل کے ایک حلقہ سے نکل کر دوسرے حلقہ میں پڑنے میں کچھ تامل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشقِ رسول ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گور بھگت بھی ہے۔ کیونکہ فاضل نے ستگورو سری بابا گورو نانک دیو جی پر بھی اپنی کئی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں۔ یا یہ کہ وہ مسلمان ہونے کے ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہوگا؟.... کچھ بھی نہیں... ہاں! اتنا کہونگا کہ لوگ مجھے "شاعر" کہتے ہیں۔

یہاں چند عامیوں[1] کے سوال کا جواب دینے میں مجھے تامل[2] نہیں کہ میں نے اپنی عمر کے گرانقدر اور مصروف ترین ۲۵ سال کرشن لیلا تصنیف اور مرتب کرنے میں اس لئے صرف کئے کہ سری گیتا جی کے مندرجہ پیغامات اور خاص طور پر اس مقدس[3] سلوک کا

نوٹ:-
۱۔ عامی :- ناخواندہ ۲۔ تامل = اندیشہ ۳۔ مقدس = پاک

यपुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमुल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण-भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाजिल ने सतगुर सिरी बाबा गुरु नानक देव जी पर भी अपनी कई तखल.कात भेंट चढाई हैं या यद कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा? .... कुछ भी नहीं......... हां। इतना कहूंगा कि लोग मुझे "शायिर" कहते हैं—

यहां चंद आमियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमुल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-व-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ कियें कि श्री गीता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

میں قائل ہوں ۔

ترجمہ :-



your right is to work only, but never to the fruit thereof. Let not the fruit of action be your object, nor let your attachment be to inaction.

تجھے کام کرنا ہے اور مردِ کار
نہیں اُس کے پھل پر تجھے اِختیار
کیے جا عمل اور نہ ڈھونڈ اس کا پھل
عمل کر عمل کر نہ ہو بے عمل

آشا ہے کہ وسیع النظری سے
نوازے گئے قارئین اور سامعین میری "کرشن لیلا" سے کافی حد تک متاثر ہونگے جس سے
اُن کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات اُبھر آئیں گے۔

فاضل کاشمیری

گُلشن نگر سرینگر 15
1-1-1984

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार
नहीं उसके फल पर तुझे इख्तियार ।
किये जा अमल और न ढूंढ–इसका फल
अमल कर, अमल कर, न हो बे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी में नवाजे गए कायरीन् और सामियीन मेरी " कृष्ण-लीला " से काफी हद तक मुतासिर होंगे — जिससे उनके दिलों में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगें ॥

फ़ाज़िल कश्मीरी

गुलशन नगर
श्रीनगर–१९००१५
१-१-१९८४

कश्मीर के रसखान

फाज़िल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लोला' नामक कृष्ण-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद. नरोत्तमदास, रत्नाकर सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढावा देने में हम उन्हें अमीर-खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं। सिख़मत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई।

फाजिल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को झंकृत कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं। उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिमुखरित

किया गया है — कृष्ण की बांसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय—भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है। वही 'जय–जय हरि' कहने लगता है। उसका हृदय पाक-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता। फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन जल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मैल को धो डालता है—

कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,
छलान हेंद्यन मुसलमानन दिलुक मल।

फाजिल साहब कृष्ण की बांसुरी की मधुरता पर मोहित हैं। बाँसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है। बांसुरी में फूंक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है। ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदी कुर्बान की जासकती हैं। इसी बाँसुरी से यह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी तो एक ही समान हैं। कृष्ण के रूप-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है। उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की बदौलत है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है। जिन व्यक्तियों

RANSLATI
This is the

के हृदय में प्रेम-सत्य की चिंगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाजिल साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सौहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण—काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

Nizamuddin

(निजामउद्दीन)

DR. NIZAM-UD-DIN
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

१२-१-१९८४

—·—

TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

etad īśanam īśasya
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaiḥ
na yujyate sadātma-sthair
yathā buddhis tad-āśrayā



TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead: He is not affected by the qualities of material nature, even though He is in contact with them. Similarly, the devotees who have taken shelter of the Lord do not become influenced by the material qualities.

ترتیب

صفحہ

۱۔ پروفیسر نظام الدین ۲۔ ڈاکٹر جگت موہنی ۳۔ علی محمد لنگر ۴۔ پروفیسر چمن لال سپرو
۵۔ شیو آچاریہ سوامی لکشمن جو گیت گنگا ۶۔ لالہ میلارام تجیون گوہ کجہ باغ۔



رادھایہ بری پیالہ۔ ژٕ گوپالہ مے کن وچھ۔ ازکالہ یژم سالہ دماہ۔ لالہ مے کن وچھ

राधायि बरी प्याल' चे गूपाल' मे कुन वुछ
अज काल यिच्यम साल' दमाह लाल' मे कुन वुछ

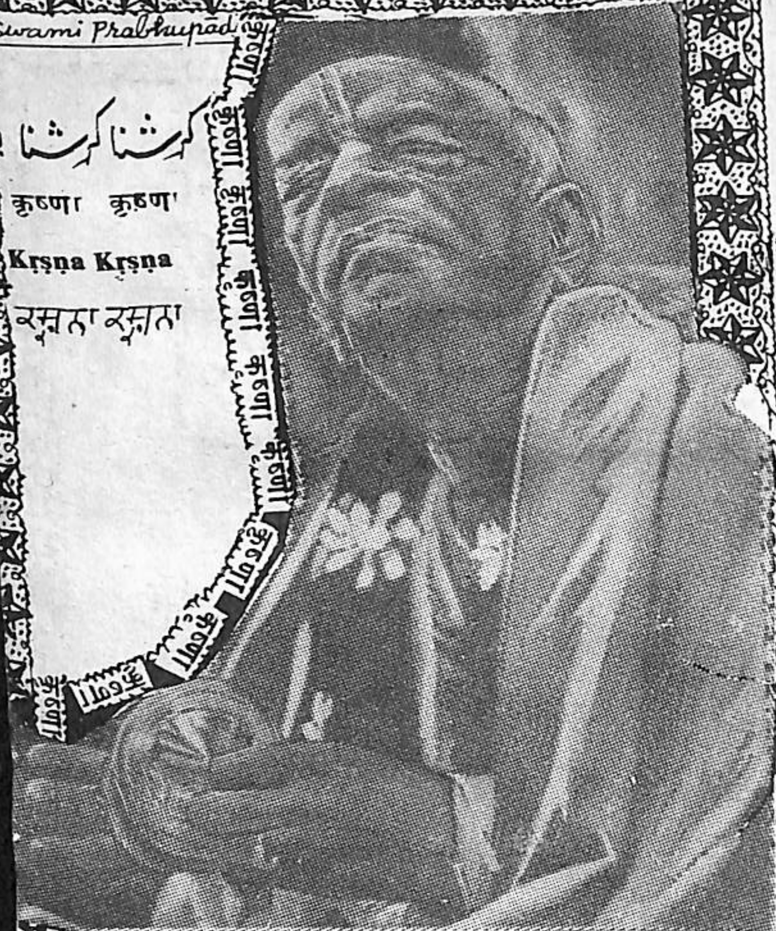
वृन्दावन कलानाथौ हृदयानन्द दायिनौ,
सुखदौ राधिका कृष्णौ भजेऽहं कुंजगामिनौ ॥

اگر چھے ظوٗن سمر بھگوانہٕ سندی گوٗن
ژٕ سٕپدی شوٗد پنُن دِل ہیرِ تےٚ لوٗت
چُھ تمی سُند ناو سمرُن عینِ اکسیر
بَناوان کیمیاگر چھے کھوٹس سوٗن

अगर कुय ज़्वन सुमर भगवानु संद्य गोन
च़य सपदी शोंद पनुन दिल हेरि तय ब्रोन
कु तेम्य सुंद नाव सुमरुन एनि इकसीर
बनावान कीमियागर कुय खोटिस स्वन

میہ نِش آو۔ بارہا آو۔ بارہا آو
کوٗرن میانِس وٕندس منز پوٗرٕ ٹھہراو
تمِس کُن اکھ قدم تُل یارِ لاگی
کرِی اوٚرےٚ دیا بھگوَن ژٕ ازماو

म्य निश आव बारहा आव बारहा आव ।
कौरनु म्यानिस वोन्दस मंज़ पूरु ठेहराव ॥
तेमिस कुन अख कदम तुल यांर्य लागी ।
करिय औरय दया भगवान च़ु अजमाव ॥



"God attracts everything. The word Kṛṣṇa *means 'all-attractive.'*

What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?"

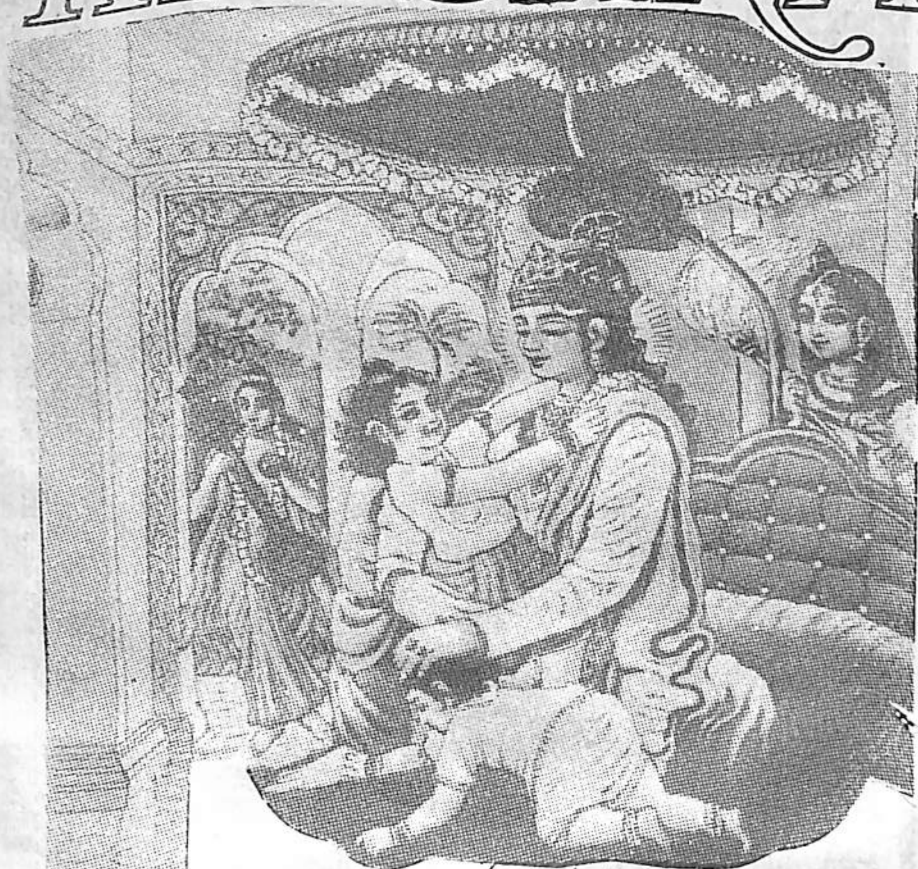
پِتا ماتا: کرشن - ماتا پِتا سُے
گورُو سُے گیان سُے تے آتما سُے
دِلَس شروپمُت - اُچھن منز جاے تنمی سنز
مُحبّت سُے خلوصِچ پنز دیا سُے

पिता माता कृष्ण - माता पिता सुय
गुरू सुय ज्ञान सुय तय आत्मा सुय
दिलस श्रोपमुत अंछन मंज़ जाय तन्म्य संज़
महोबत सुय खुलूसुच पंज़ दया सुय ॥



कृष्ण पंज़य पांठ्य मखलूकान पनन मोल ।
करान छिस पोंपुरिन्य गथ, तस वरान लोल ॥

KRISHNA



کرِشن پنٕنی پاٹھۍ مخلوقن پنُن مول

کرَان چھِس پونٕپیرِ گنتھ تَم بَرلن لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)

پرزلونی دست و پا چھم سریہ کرشنس
دلکی یم نقشہ ہاوم سریہ کرشنس
یمو کانیاہ حسین پمپوشہ سر کری
یمو ستھی تخ سجاوم سریہ کرشنس

۱۔ دست = اتھہ۔ ۲۔ پا = کھور ۳۔ تخ = تخت

प्रज़लव़न्य दस्त पा छिम श्री कृष्णस
दिलुक्य इम नक्शि हांविम श्रीकृष्णस
यिमव 'कांत्याह् ह्सीन पंपोशि सर 'कंड्य
यिमव सूत्य तख सजांविम श्रीकृष्णस




His
Divine
Grace
कृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं

خوبصورت

خوبصورت سانہٕ آنگنۍ ژاو تے
گوپین دِیِ تہٕ کرشن سون آو تے

کرشنہٕ ڈیٖوٹھم ژھایہٕ رُوس زن ماہتاب
شاہہٕ ژھاین سریہ ہیوٚ نوٚن دراو تے

ہیون دِل اوس دارِ رُوس دروازٕ رُوس
اُتھی اندر پرژھنے کوٚرن ٹھہراو تے

توٚرِ سُتی اوٚنہ پوٚکھ کرُک کوٚرنم نہال
ہن پرسن چھُم۔ دِل برُن چھُم چاو تے

ذِکر پیٹھ تے فکرِ پیٹھ کرُنم دیا
ہیانہٕ غفلژ ہُند ہیوٚتن ماناو تے

کرشنہٕ! دیُتھم تیوٚت رٔژی رٔژی سیر گوٚس
توٚتہٕ دوٚ پھٹم پیٚچھنہٕ روٗزی گراو تے



खूब सूरत सानि आंगु'न्य चाव तय।
गूपियन द'व्य तव कृष्ण सोन आव तय॥

कृष्ण च्चूठुम छायि रो'स जन माहताब,
श्याम् छायन सिरिय जन नो'न द्राव तय॥

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़' रो'स।
मंध्य अन्दर प्रछनय को'रुन ठहराव तय॥

नूर् सात्य ओ'न्द पो'ख गरुक कोरनम निहाल,
मन प्रसन्न छुम दिल बराम छुम चाव तय॥

ज़िकिरि प्यठ तय फ़िकिरि प्यठ कोरनम दया।
म्यानि गफ़ल'च़ हुन्द ह्योतुन मा नाव तय॥

कृष्णु द्युतथम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस,
तोति दोपथम "युथ नु रोज़्यम ग्राव तय?

● یوہ ژھورم، اوہ کرشنن گوہ تس
بس کنی کتھ : کرشنہ گارن پراوتے
کرشنہ سمرت کرتہ چشمو ڈیشہن
یود نہ باور چھے ذرا آزماو تے
بانسری کن کن تھووم منزل سوورم
فاصلا! سہ انگن میہ گو صحراو تے

— · —

شہکار

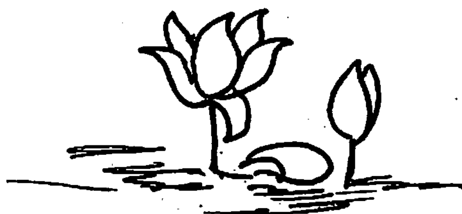
● میہ گو بیدار بخ . از گوم بیدار ۔ بخت
وچھم دیدو کرشن تس سریہ انہار
سہ گورت وہ ستہ کارن پوز صنم ہیو
دتن زگتس پنن اکھ حسن شہکار

— · —

योर् छोरुम ओर् कृष्णन गोरनस।
बस कुनी कथ—कृष्णु गारुन प्राव तय॥

कृष्ण स्मरन करत' चश्मव डेशिहन।
योद नु बावर छुय् ज़रा अज़माव तय॥

बांसुरी कुन कन थोवुम मंज़िल सुरुम।
'फ़ाज़िला'! आंगुन म्य गव संहराव तय॥





म्य गव बेदार बरुत अज़ गोम बेदार।
वुछुम दीदव; वुछुम तस सिरियि अनहार,
खुदा सांवन कृष्ण गोर सोंच कंडि कंडि।
दितुन जगतस पनुन असल हुसनि शाहकार॥

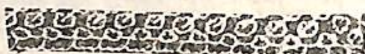


میرابیٹھ کرشنہ دیا

پرمیہ ہُنز میرا سو گیاؕ نچ کنی ہتال
جلوٚہ آوتھ بختہٕ بڈ کرِ تھفن نہال
بالہٕ کرشنا اُتس یہ پز ٹھنے دِتھ ژ گوکھ
تی دِتھم چھپے پننہٕ عظمژ ہند سوال

ژٕ یٖہ یامَت کھوٚلتھَم سَتھ دَرشنکہِ بَرٕ
کھوٚرَن تَل وُچھ مےٚ صحرا، کوٗہ تہٕ سنگر
مَکانکۍ تےٚ زَمانکۍ حلقہٕ ژھوٚٹۍ گٲم
چھُہَم نا کرشنہٕ گوپالا ژٕ یاوَر

चे यामत खूल्यथम सथ दर्शनकि बर।
खोरन तल वुछ म्य सहरा ,कुह त संगर
मकानुक्य तय जमानुक्य हलक छोट्य गंम
छुहम ना क्रष्णु गोपाला ! च्य यावर ॥



मीराय प्यठ क्रष्णु दया

प्रेमु हुच मीरा ख ज्ञानुच कुन्य मिसाल,
जलवु हा विथ आर'कं'च क'रथन निहाल ।
बालु कृष्णा तय यि पिछनय दिथ च' गाख
ती दितम म्य पनानि अज़म'च हुन्द मवाल।



भक्तिमती मीरापर कृपा

چانہ پریمک زونگ یمس لوگ سور گو
سریہ من پروون زژن ہند نور گو
لن ترانی پرانہ سمیچ ریت آس
قوربہ ستی میرایہ انگ انگ طور گو

चानि प्रेयमुक ज़ोंगं यैमिस - लोंग सूर गव,
सिर्यैयि मन प्रोवुन ज़चन हुन्द नूर गव ।
लन तरांनी प्रानि समयिच रीत ग्रांस ,
कोर्व् सूत्य 'मीरायि' ग्रंग ग्रंग तूर गव ॥



میٛون دِل اوس دارِ رۆس دَروازٕ رۆس
اَتھی اندر پرٛژھنے کوٚرُن ٹھہراو تےَ

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़ रो'स।
अंथ्य अन्दर प्रछ़नय को'रुन ठ़हराव तय ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मास, दो नैना मत खाइयो, पिया मिलन की आस ॥

ॐ सत सत ॥

Love at first Sight

خانْدَر

شُبیہہ کرَشنُن وُچھُم دھرتی بنیُل گو
اُچھنِ تھندِس شُبیہس ستی میُل گو
وجُودُک وِیُژ تھوُوُم بَس آیتَن تسی
کرشنِ پرُووُم مِیہ کیُت خانْدَر مُرشھیل گو

(مِیرا)



۱۔ شبیہہ = فوٹو
۲۔ دھرتی = زمین
۳۔ وِیُژ = جائداد
۴۔ مُرشھیل = شگفتگی
۵۔ آیتن = حاضر
۶۔ پرُاوُن = حاصل کرُن

शबीह कृष्णुन वुछुम धरती बुन्युल गोव,
अछन लंहदिस शबीहस स्त्य म्युल गव ।
वजूदुक व्युच थोवुम बस आयितन तस्य,
कृष्ण प्रोवुम म्य क्यत खांदर संछ्युल गव ॥

کاگا سب تن کھائیو، چن چن کھائیو ماس۔ دو نینا مت کھائیو، پیا ملن کی آس



شُرِ کرَن پۆزا پزُیک اِظہار یٔی
کرٛشنہٕ بھگتَن شُرلِہ مَنٛز تام کار یٔی
زاہدا! یِتھٕنۍ کرٛشن دَرشُن دِوان
دِل کرُن موصُم۔ دِئی اُدھار یٔی

शुर्य करन पूज़ा—पज़्युक इज़हार यी,
कृष्ण भक्तन शुलि मंज़ ताम कार यी।
ज़ांहिदा ! यिथिनय कृष्ण दर्शुन दिवान,
दिल करुण मोसूम दियी ओधार यी ॥



۱ انسان	ییمیس پُرشس زَنَم ییوٚ پھرِ وُٹھ پانَس	۲ بالگوان
	رُٹِن کُنی کرشنہٕ وَتھ ووت لاٰمکانَس	
	چھُپے پیرالَب گِنِز اَگرِ وِلہٕ سِنز کَل	قسمت
۵ سَر = جھیل	یِنی پمپوشہٕ سَر اَنگ اَنگ زِبہٕ پانَس	

مساوات ییم وہ یوگی ہے افضل جسے ہو سب ایک سلگے دوست لے لاگ حباب نیک

پرَن گیتا تہٕ کرٛشنُن داس سپدکھ
سوٗرن گیتا تہٕ کرٛشنٕنۍ ماے پراوکھ
کرِی میُل کرٛشنہٕ لالس سیتۍ سمرن
سمرٕ گیتا سمرٕ کرٛشنا مہ کڈٕ تھکھ

परुन गीता त कृष्णुन दास सपदख
सुरुन गीता त कृष्णन्य माय प्रावक
करी म्युल कृष्णलालस सूत्य स्मरण
स्मर "गीता" स्मर "कृष्णा" मकड थख

येंमिस पुरुषस ज़नुम प्यव फ़ूच़ पानस,
रंटुन कुन्य कृष्ण वथ बोत लामकानस।
छुयय प्रालब्द गंनिर अक्रूर संज़ कल,
बंनिय पंपोशि सर अंग अंग चें पानस॥

नोट -

वल=गंड, मुशकिल



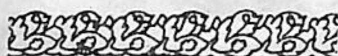
भक्त रसखानपर कृपा

رَسہٕ خانَن گورَن کٔرتھس دَیا[1]
لولہٕ والین کٔرٕ دَیا کینٛہہ کٔم چھیا
نابہٕ کارٕ چھُس۔ مگر چھُن داس چھس
کرتہٕ داسَس بیٹھ تہٕ اَزٕ مہر لگا

۱ مہربانی

یَمِس پیٹھ کرٛشنہ مہاراجن دَیا کر
بہٕ آسانی تمِس ناو ساگرس تر
حَیاتی تِہنٕز پیٹھ جیوٗن تہٕ حٲران
سُہ وآنس زِندہٕ رُود پرٛاوُن عُمر زٕر

यमिस प्यठ कृष्ण महाराजन दया 'कर
ब आसानी तमिस नाव सागरस 'तर
हयाती तिहिंज़ प्यठ जीवन ति ह'रान
सु वांसन ज़िद रूद प्रवन उमर च़र



रसखानस टोठ्यव दया

रस खानन गोरनख क'रथस दया,
लोल्'वाल्यन किच़ दया कौंह कम छया।
नाव्'कारा छुस. मगर चोन दास छुस,
करत् दासस प्यठति अज़ म्यहर् च निगाह॥



भक्त विल्वमंगलपर कृपा

گُپالَن بلوٚمَنگل کوٚرٕ یہِ خوشحال
تِمِس اوس کرٛشنہٕ سِمرَن حال تَے قال
اَوَے کرٕنووُن سۄ منزِل سَواگت
چھ کوتاہ رُت دیالوٗ کرٛشنہٕ گوپال!

یموٗ لُہروٗ پزُرُک قصرِ شاہی
تِموٗ کُر پانہٕ سۭے آخر تباہی
کرشن مہراج ووٗتھ اُدھار کورٕنٲکھ
چھُ کوتاہ جان بھگوَن یا الٰہی

यिमव लुहरोव पज़रुक कसरि शांही,
तिमव कंर पानुसुय आंखर तबांही।
कृष्ण महाराज वोंथ उधार कोंरनख,
छु कोताह जान भगवन या इलांही!

गोपालन बिल व मंगल कुरुय खुशहाल,
तमिस ओस कृष्णु स्मरण हाल तय काल।
अवय करनाव्यनस मंज़िल स्वागत,
छु कोताह रुत, दयालु कृष्ण गोपाल!!



फलवालीपर कृपा

میوٕ واجینی بخت بُڈ اکھ نازنین
کرٛشنہ سمرن اوس تس پوٗراتہ دین
پیٛرتھ میوس منز درینٛٹھی گو تس کرٛشنہ رنگ
ہوونس تمی موکھ ینن۔ کوتاہ حسین

چھ کِرداٗرک تھزر وِیوٗد کرٛشنہٕ بھکتس
تَمِس گیانچ تَپِش پانَس اَندَر مَس
چھِ اوگون تَس نِشہٕ یَژ دوٗر یَژ دوٗر
تھوان بَھگوَن پرُش یِتھہٕ سٔتی پانَس

छु किरदारुक थज़र व्योद कृष्णु भक्तस,
तमिस ज्ञानुच्य तपिश पानस अन्दर मस,
छि अवगुण तस निशे यंच़ दूर यंच़ दूर,
थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यन्य भक्त वंड़ अख नाज़नीन,
कृष्णु स्मरण ओस तस पूज़ा तु दीन।
प्रथ मेवस मंज़ द्राट्य गव तस कृष्णु रंग,
होवनस तम्य मुख़ पनुन कोता हसीन ॥



سور داسس کرشنہ ! بخشتھ گیان دھیان
تشنہ ہردن گوشہ عرفان باگران ۲
کیاہ گژھی کم یوٗد مہ تے ساگر کرکھ
لکھ مہ منزی بیتھ اسہن تارس تران

کرکھ یوٗد کرشنہ سودا، کن پنن دل
مگر سودا بنن دوٗن منز چھ مشکل
کری ما اور بھگون بخت بیدار
ملے کر کرشنہ بھگتی بن ژ فاضل

करख योंद कृष्ण सोदा 'कुन पनुन दिल,
मगर सोदा बनुन दुन मंज़ छु मुशकिल।
क़री मा ओर् भगवन भक्त बेदार,
मुलय कर कृष्ण भक्ती बन च फ़ाजिल॥



सूरदासस आंनुथ गाश

सूरदासस कृष्ण बनुथ ज्ञान ध्यान,
तस्नु हृदयन गो मु इरफ़ान बांगरान।
क्याह गछी कम योंद म्यते मागर करख।
नुख म्य मंज़्य युथ प्रास'हन तारस तरान॥



श्रीकृष्ण-चरण

کرشنہٕ اچھو نٕے نقشہٕ پاچھم شوزٕ من
چھس اوٕے کنی دین ودھیچ وتھ سولن
یٕ کران لچھ منزلن ہنز وتھ گڈٕم
چھیکرس چھس پانہٕ از منزل بنن

کیا خدا ہے؟ اس کا جواب گیتا دیتی ہے۔ خدا ہے بلکہ خدا ہی ہے۔ دوسرے

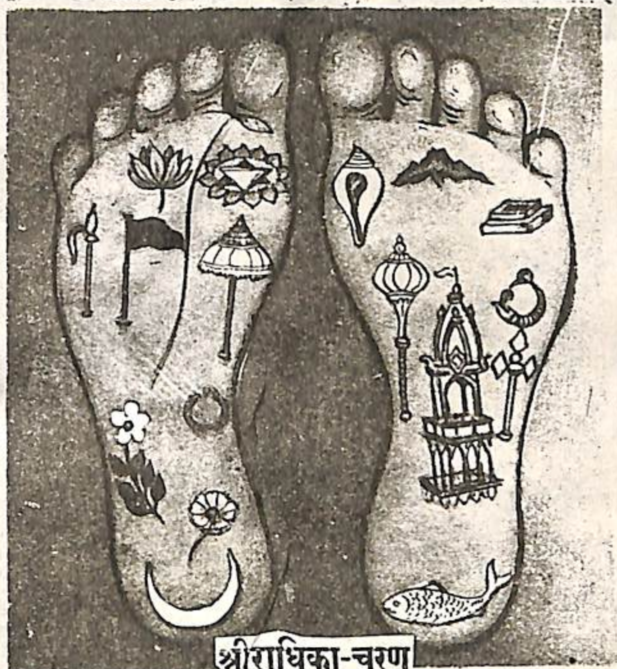
شری کرشنَنی چرَن سادھن کلس پیٹھ
مگر یارَس چھلان پنُنو اَتھو کھور
یہ کرنَس منز تمِس حاصِل پرسنتا
یہ گو پریمک غلوصُک آخری حد

نوٹ :۔ ۱۔ یار : سُد آما جیس کُن اِشار ۲۔ پرسنتا : خُشی ، مسرت ۔

श्रीकृष्णन्यचरण सादन, कलस प्यठ,
मगर यारस छलान पनुन्यव अथव खुर।
यि करनस मंज़ तमिस हासिल प्रसन्नता,
यि गव प्रेमुक, खुलूसुक आखरी हद ॥




कृष्ण! चोनुय नकश' पा छुम अ़च मन,
छुस अवय किन्य दीन' धर्मुच वथ स्वरन।
यी करान लछ मंजिलन हुंज़ वथ कंड्य,
छेकरस छुस पानु अज़ मंजिल बनन॥



श्रीराधिका-चरण

رادھا چھ آمژ کرشنہ وتو ڈالہ اَنِن زان

پرتھ منزلس پیٹھ زانہ وُنین باگہ دِتن گیان

محروم پھرشن بانہ دِین دیت نہ بخش دِل

تم گاشہ تِس یُتھ دور پیمتی اَئی تہ پریشان

پمپوشہ پاد

۱

ڈالہِ شوٗبیا میون دِل مورلی درس
بس یوٗہے پمپوش پھوٗل میانس سَرس
دِل چھُ دل: پمپوشہ پادن ہُنْد عکس
ڈالہ گذرأوِتھ کھورن میوٗٹھہ کرس

पंपोशि पाद

डालि शूब्या म्योन दिल मुरलीदरस,
बस योहय पम्पोश फोल म्यानिस संरस।
दिल छु दिल पंम्पोशि पादन हुन्द अकस,
डाल्य गुज़रांविथ खोरन म्यूठा करस ॥

राधा छि श्यामच कृष्ण वतव, डाल अंनिन ज़ान
अथ मंज़िलस प्यठ ज़ानुवुन्य न बागि दितुन ज़ान
महरूम पुरुषण बानु, दयन च्युतु नु बखशुन दिल,
तिम गाशिनिश येच दूर प्यंमति अन्य तु परेशान



گیٚشیمِس بالکَس نِش نرۄن شَربان
پُرٛی چھا ! خۄر چھا ! اوتار انسَان
اُچھَن وُزمَل ، ڈیکَس ژُندرَم موکھَس گَہ
یہ وُچھتھے کامہ دیوَس ہوش رَاوان

—— · ——

سِری کرِشنا! ہَنک وِیژ باوَفا دِم
پِتا ماتا چھُہَم پرُیچھ دَیا دِم
یمَن ہیانِن گُونَن پھِر امرِتُک سَگ
اَمی سِتی زَنمہ کھیُر کاسُم بَقا دِم

श्री कृष्ण ! मनुक व्युच बाबफा दिम
पिता माता छुह्म प्रमच्य दया दिम
यमन म्यान्यन गुणन फिर अमृतुक सग
अमी सूत्य जन्म फुयर कासुम बका दिम



ग्येशेमिस बालकस निश जून शरमान
परी छा ! हूर छा ! अवतार इन्सान ।
अछन वुजमल, ह्यकस चन्द्रम मुखस गाह
यि वुछथय कामदोवस होश रावान ॥



سُمی توِی گوٚہیوٚ شالِمارٕ ہے ترٛو

بالہٕ کرٛشنس کرٛو پوشہٕ پوٗزای

پوشہٕ پوٗزا کرِتھ لولہٕ شبدہٕ پرٛو ۔ بالہٕ کرٛشنس کرٛو پوشہٕ پوٗزای

بالہٕ کرشنس کرٛو پوشہٕ پوٗزای

۱۹۔ کبھی خون کرتی نہیں آتما ۔ کبھی خود بھی مرتی نہیں آتما

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥

روٗپ میون اوس مَن ہمی سِتی نار زَن
زَمہریرکی پاٹھی شیہلوو سوچن
تن حرارت۔ مَن چھ گیانچ ژینہ وَنی
ژینہ وَنی گیانچ دِژِم موٗلی دَرن

रूप म्योन ओस मनहंमी सत्य नार ज़न,
ज़महरीरक्य पाठ्य शेंहलोव सोंचनन।
तन हरारत- मन छु ज्ञानुच चेनुवन,
चेनुवन ज्ञानुच दिचुम मोरलीधरन॥

(वनुवुन

सम्यतवी गूपियव शालुमार हय तरव,
बालकृष्णस करव पोशि पूजा १
पोशि पूजा करिथ लोलु शब्दाह परव
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।

گوکلس ساآری سے زِتنہ زُولہ کرُو۔ جایہ جایہ ہے کرُو شُہندر مس سال

پریمہ سٕتہ بانسری لولہ تھاکن برُو

بالہٕ کرٕشنس کرُو پوشہ پوزای

اُلفیتچ مُورتھ ییتھ شریرس گرُو۔ لولہٕ والین دُپو ییتھ یرن ماے

مایہ ہوت اکھ قدم تل زُوچھ مامرُو

بالہٕ کرٕشنس کرُو پوشہ پوزای

مالہٕ لوگ پیر بتس ییتھ بہن مازرُو۔ سارِنے دِل تہٕ شل اَرچھ لوشان

گبو نہ لج آبہ جوی۔ نتہٕ نہ لگیم سرُو

بالہٕ کرٕشنس کرُو پوشہ پوزای

حُسنہٕ آکاشہ کنی لعل و گوہر جرُو۔ تارکن فاضلا شولہ براگاش

دِلوین گوژھہ ونن پایہ اَز ترُاو رُو

بالہٕ کرٕشنس کرُو پوشہ پوزای

۲۲۔ بدلتا ہے انسان لباس کہن نیا جامہ کرتا ہے پھر زیب تن

गूकुलस सांयंसय ज़ितिनि ज़ूलाह करव,
जायि जायि हय करव चंन्दरमस सान।
प्रेयम स्रेह बांसुरी लोलु थालन वरव।
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

उल्फतुच मूरथा यथ शरीरस गरव,
लोलुवाल्यन दमिव यथ बरिव माय।
मायि हेत अख कदम तुल चु वुछ मा मरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

मेलु लोग परबतस पथ ब्युहुन मा ज़रव,
सारिनय दिल तु शिल अज़ छि तोशन।
ग्यवनि लंज्य आबु जुय नचुनि लंग्य यिम सरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

हुसनु आकाशि किन्य लालु गोहर जरव,
तारकन 'फाज़िला' शोलि प्रागाश।
दीवियन गोछ वनुन पानु अज़ त्रावि रव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च। नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

22/2



جے جے!

مَنَس مَنز گرزان بانسُری ہِنز ہوٗدِر ے
یہ لے بالہٕ کرشنا چھ چانی ژٕ جے جے

پیزِیک آلوہ گو وَنن مَنز بیَا پے
یہ چانی چھ بُڈ مہربانی ژٕ جے جے

دودُک شرِہیہ تہٕ امرِت چھ کھاسین برٕنے
چھ اتھ سلسبیلچ رَوانی ژٕ جے جے

ہوکھسن بیٚٹھ گلاب پانہٕ پرٕمی ژٕ چھُے دے
نہ کُنہٕ چھُے برابر نہ ثانی ژٕ جے جے

دُیی کُم گُزِھتھ پانہٕ مُنزِل گزِھان طے
یِمے گوون کران پاسبانی ژٕ جے جے

۳۱۔ مہاراج کیشو میں اب کیا کہوں ہا کہ آثار بد ہیں برے دن شگون

जय जय

मनस मंज ग्रेज़ान बांसुरी हुंज़ मोंदुर लय,
यि लय बाल् कृष्णा छें चा'नी चें जय जय।

पज़्युक श्राल्वाह गव वनन मंज पयापय,
यि चांनी छें ब'ड मेंहरबांनी चें जय जय॥

दो'दुक स्तेंह त् अमृत छें खास्यन बरान नय,
छें अथ सलसबील् च[1] रवांनी चें जय जय॥

मोखस प्यठ गोलाब पान् प्रेमी चें छुय दय,
न कांह छुय बराबर न सा'नी[2] चें जय जय॥

दुयी कम गंछ़िथ पान् मेंज़िल गछ़ान तय,
यिमय गुण[3] करान पासबांनी[4] चें जय जय॥

नोठ : 1. सोरगुक सर 2. चे ह्यु व 3. सिफत 4. र'छ

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव । न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च



رادھایہ وُذ تو شاہہ گٹن اُدھایہ کرشن جی

درشن چھ ہاوان پانہٕ کمیو ترایہ کرشن جی

تھٕنی نقشہ بنی بنی گاشہٕ بھقس غاز برہمن گو

لولس تہٕ ہردس سریہ چھ سرایہ کرشن جی

یتھ جایہ لوکن مایہ لوٗرت شرہیہ تہٕ سمت خوی

صُلح چھ وایان بانسری تتھ جایہ کرشن جی

یتھ کرایہ آتش نار ترزر تھہلیشہ بنین لوگ

تتھ کرایہ گنگا آبہ شہل سایہ کرشن جی

فاضل اچھ تس تس باگہ تھزر لانہ سبزر تس

یس پر سیمہ سانے تیر نظر لایہ کرشن جی

۳۴۔ پدر بھی ہیں دادے بھی استاد بھی پسر بھی ہیں اور ان کی اولاد بھی



राधायि वनिव शामु गटन छायि कृष्ण जी,
दर्शुन छि दिवान पानु कम्यू ज्ञायि कृष्ण जी॥

थंन्य नक्शि वनिथ गाशि बुथिस गाज़ व्रमन गव,
लोलस तु ह्रुदयस सिरियि छु सरमायि कृष्ण जी॥

यथ जायि लुकन मायिबोरुत श्रोह तु समुत ख्योथ
सुलहुच छु वायान बांसुरी तथ्य जायि कृष्ण जी॥

यथ क्रायि भ्रातश नारु तचर त्रेशि हत्यन लोंग,
तथ क्रायि गंगा ग्रयि शुहुल सायि कृष्ण जी॥

"फाज़िल" छु बखतस बागि थज़र लानि स्यज़र तस,
यस प्रेमुसानुय तीरि नज़र लायि कृष्ण जी॥

नोट –

ज्ञायि=नहजि २ गाज़–पोड़र
३ व्युच–सरमायि

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥ एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥





(مورلی ہنز لے)

لے

یام شہ دیت کرشنہ اوتان نئے
جے ہری کور زِگتہ سمسارن دئے
ازتہ زانتھ یا نہ زانتھ گہ بہ لگہ ۱
کُلّ شیمی جے تھوکھ کن تتھ لئے

---

۱ لُس کہنہ چیز زِندِ چھُ مثلن حیوانات، نباتا تہٕ جمادات بیتر -

۳۷- یہ دھرتی انشر کے جو فرزند ہیں یہ سادھو سب اپنے جگہ بند ہیں

کرشنہ مورلی پرتھ زمانس منز وزان
یم چھ بوزان تم چھ بارٕنی ہوی بنان
یا الٰہی یوت تاثیر چھا شہس
تفرِقک وَل حَل چھ اقوامن گژھان

कृष्ण् मुरली प्रथ ज़मानस मंज़ वज़ान,
यिम छि बोज़ान तिम छि बारन्य हिव्य बनान।
या इलाही ! यूत तासीर छा शॅहस !
तफ़रिकुक वल हल छु अकवामन गछान॥

याम शह च्युत कृष्ण् अवतारन नये
"जय हरी" को'र ज़गत संसारन दये।
अज़ ति ज़ानिथ या न ज़ानिथ गहबेगह[1]
"कुल्लुशयुनहय"[2] थॅविथ कन तथ लये[3]॥

नोट। 1 गहबेगह— कुनि कुनि विजि
2 'कुल्लुशयुनय'— यि छाह जिन्दह छु
3 लये— आवाज

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥ यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥३८॥
कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् । कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥

تَلا بانسُرِی تُل!

گُبپَالا! پھولَن گُل ۔ ذَرا بانسَرِی تُل
ژِ بہ پیارٕ اچھ بُلبُل ۔ ذَرا بانسُرِی تُل!

ژِ پریمُک تہ لُولُک مُجَسَّم مُجَسَّم
فِدا چھی ژِ بہ کَم کَم ۔ ذَرا بانسُرِی تُل!

نبَس پیٹھ سُلِی کورٕ تمنّا سِتارَو
قَدَم تھَو قَدَم تھَو ۔ ذَرا بانسُرِی تُل!

ژِ بہ پرتَو مِہ ترٕوُوتھ، مگر ژھایہ ژھائَے
گژھِس چانہٕ مائے ۔ ذَرا بانسُرِی تُل!

۱۔ ذرا = ہَنہٕ ۲۔ نَب = اسمان ۳۔ تمنّا = شوق ۴ پرتَو = جلوہ

یہ قبیلہ فنا گر کوئی ہو گیا قدیمی وہ دھرم اُس کا سب کھو گیا

बाँसुरी तुल

गुपाला ! फोलन गुल, ज़रा बांसुरी तुल,
चें आरान छि बुलबुल, ज़रा बांसुरी तुल।

चु प्रेयमुक तु लोलुक मुज्जसम मुज्जसम,
फ़िर्वा छी चें कम कम, ज़रा बांसुरी तुल।

नवस प्यठ सुली कोर[1] तमन्ना[2] सितारो,
कदम थव कदम थव, ज़रा बांसुरी तुल।

चें परतव[3] म्य ओवुथ मगर छायि छाये,
गंजिस चानि माये, ज़रा बांसुरी तुल॥

नोट :— 1. कोरबान 2. :— यछा 3.— अलव

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥ अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ॥४१॥
सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥

گٹن منز ہر یہ گو یتو گاشرو ولی
اُچھن ہیلتو ملی، ذرا بانسرِ تُل!

یمن گوپین منز ژ یہ موہ رلی دِتھ شہ[1]
تمو کوٗر دیُی لہٰ[2]، ذرا بانسرِ تُل!

ژ بالگ اَو سنتھا، ژ یہ شوبھا چھ عظمتھ
ژ گنج حقیقتھ، ذرا بانسرِ تُل!

کُنش ہش کُنش چھے ژ یہ اُتھ بالہ پانس
ژ مرکز[3] جہانس، ذرا بانسرِ تُل!

دَیاہ سانہ بہیتو! ہیہ تھوٗو از لوٗتھ[4] دِل
چھ فاضل ژ یہ ہائیل، ذرا بانسرِ تُل!

۱۔ شہ: پھوکھ ۲۔ لہٰ: لہ، لا = انکار ۳۔ مرکز: اَوٚہوٗکھ ۴۔ لوٗتھ: لوتھ دوتھ

۳۔ ہم قبیلوں کو غارت کریں جو بستر، ہوئیں ورن ان کے پاپوں سے زیر و زبر

गटन मंज हुरचर गव यितो गाशरो वंल्य,
अ'छन मेलतो म'ल्य, ज़रा वांसुरी तुल।

यिमन गूपियन मंज़ चें मोरली दितुथ शह,
तिमव कोंर दुयो लह[1], ज़रा वांसुरी तुल।

च' बालक अवस्था, चें शोबा छय अज़मथ[2]
च़ जगत च हंकीकत, ज़रा वांसुरी तुल।

क'शिश हिश कंशिश छय चें अथ वाल पानस,
च़ मरकज़ जहानस, ज़रा वाँसुरी तुल।

दमाह सानि बेंहतो, मे थोवमय लिविथ दिल,
छु 'फ़ांज़िल' चें मांयिल, ज़रा बाँसुरी तुल॥

नोट :— 1. इनकार 2. बजर



مَنزلی یاتھ

آلہِ ۔ نابدَ ۔ زیٖرَ ۔ بادٲم چھیلیو
لولہِ بُرتھیو کرٛشنہِ لالو اَز ولو
دَرشُنک وٲلنٕس مےٚ رُودُم آرزو
لولہِ بُرتھیو کرٛشنہِ لالو اَز ولو

ہَی تہ یمبرزَل تہٕ جافری تےٚ گلاب
یاسمن، پمپوش، وِری کیٖمی، آفتاب   گُلِ آفتاب
یم دیَن کرٕی یادٕ ژم گُل لاگیو
لولہِ بُرتھیو کرٛشنہِ لالو اَز ولو

دُوسرا ادھیائے

سنجے نے کہا

۱۔ جو ارجن کا دیکھا یہ رنج و ملال ۔ غم و سوزِ دل میں طبیعت نڈھال



प्रालु, नाबद, चेर, बादाम, छिकयो
लोलु बेयंत्यो कृष्णु लालो ब्रज बुलो।
दर्शनुक वांसन में ह्दुम आरिज़ो,
लोलु बेयंत्यो कृष्णु लालो ब्रज बुलो॥

ही तु यंम्बरज़ल तु जाफ़ुर्य तय गुलाब,
योसमन, पम्पोश, विरिकेंम्य आफ़ताब,
यिम दयन कंर्य पोंदु गुल तिम लागयो,
लोलु बेयंत्यो कृष्णु लालो ब्रज बुलो॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥
कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥
क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

میانہ وارن سینہ کین پنجرن اندر
اکھ دیچ کوٹھر چھ چھٹمژ زن کھنڈر
چانہ باپتھ چھم رلوتھ تھوومژ ہیہ دو
لولہ بُرتھ تیو کرشنہ لالو اژ ولو

سریہ ہوکھ ژندرم ڈیکس تارکھ جُبرتھ
ہرنہ چشمن زن ژہ چھے امرت بُرتھ
دل چھوہ لیم گاہے ژہ پہتھم روبرو
لولہ بُرتھ تیو کرشنہ لالو اژ ولو

چانہ وہرے گوکلکی منزل ژھنڈم
وُنی درم جمنایہ بھٹھ بُھٹھ پے تھوم
دراصل چھم یس ہہ چونے جستجو
لولہ بُرتھ تیو کرشنہ لالو اژ ولو

ارجن کا جواب

۲۔ وہ بولا کہ اے فاتح دشمناں مدھو یارن! مجھ سے یہ ہو گا کہاں۔

म्यानि वारान सोनुक्ष्यन पंजरन अन्दर,
अख दिलुच कूठरछि फुटमुच़ जन खण्ड़र।
चानि बापथ छम लिविथ थंवमच़ मे-दो,
लोल् बंर्यत्यो कृष्णु लालो अज़् वुलो॥



सिरियि मुख चंन्दरम ड्यकस तारख जंरिथ,
हरणु चशमन ज़न च़े छुय अमृथ बंरिथ।
दिल फ़ोल्यम गाहे च़ु बिहतम रोबरो,
लोल् बंर्यत्यो कृष्णु लालो अज़् वुलो॥



चानि वेरे गूकलक्य मंज़िल छ़ंड़िम
वंन्य दितिम जमनायि बंठ्य २ पय ,पंविम
दर असल छुम बस मि च्योनुय जुस्तजो,
लोल् बंर्यत्यो कृष्णु लालो अज वुलो॥

नोट— १ आबे हयात २ तलाश।

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥
गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥



سالہ ہیتو!

کرشنہ گوپالہ! دماہ سالہ ہیتو
سریہ میثالہ دماہ سالہ ہیتو

میانہ امارہ! اچھ مشکل بے ژرِخِیا
وقتِ کوٚوو ثرالہ دماہ سالہ ہیتو

انتظاری، بے قراری پیرالَبس
نہ کُمس کھالہ دماہ سالہ ہیتو

یانسری تل! ازن وسن ہتھ سلسبیل
اُسی برو پیالہ دماہ سالہ ہیتو

فاضلن تھوو من سجاوتھ بس زیہ کیت
ازلی کالہ دماہ سالہ ہیتو

संजय उवाच

साल् यितो

कृष्ण' गूपाल्'! दमा साल यितो,
सिर्य मीसाल् दमाह साल् यितो।

ग्यानि अमार! छे मुशकिल बेरुखी,
वोन्य कवो चाल्,दमाह साल् यितो।

इन्तिज़ारो, बेकरारो प्रालबस,
राह कंमिस खाल्',दमाह साल् यितो।

बांसुरी तुल ज़न वसन हथ सलसंबील,
अस्य बरव प्याल् ,दमाह साल यितो।

"फ़ांजिलन" थौव मन सजांविथ बस चें
वयुत
अज़ सुली काल्,दमाह साल यितो।

नोट : 1. नसाब, तकदीर, 2. बर्गुक सर

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥७॥
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप ।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥



رادھایہ بُری پیالہ ژہ گوپالہ مہ کن وچھ!

اَز کالہ یَزِہ سالہ دَماہ لالہ مہ کُن وچھ !

مورلی دِ کینہ مُشہ تہ گلن پھیر پنن رنگ — ۱- پھوکھ

بُلبُل ژہ کرن لوسمن مالہ مہ کن وچھ !

تن تھنی تہ بتھس جلوہ اُچھن سیحر دلکس گہ — ۲- گاش

زن سریہ ژہ موصومہ کرتھ نالہ مہ کن وچھ ! — ۳- دائرہ حلقہ

۱۰- ادھر فوج تھی اور ادھر فوج تھی دل ارجن کا اور معظم کی اک موج تھی



में कुन वुछ

राधायि बंरी ¹थाल' चे गूपाल' में कुन वुछ
अज काल यिव्यम सालु' दमाह लाल' में कुन वुछ

मोरली वि कुनुय शह तु गुलन फेरि पनुन रंग
बुलबुल चे करन यासमनन माल' में कुन वुछ

तन थन्य तु बुथिस जलव', अछन सेंहर, ड्यकस गाह
जन सिरियि चे मोसूम करिथ हाल' मे कुन वुछ।

नोट: 1. गाश 2. थालव-थालव (थाल सूत्य)

श्रीभगवानुवाच अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥१०॥
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः । न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥

گوکُل بہٕ نمتھ شاہہ گٹن ژھایہ وَندے زو

یادم تہٕ خفر، آلہٕ چھکے بھٲلہٕ مہ کُن وُچھ!

ازچانہٕ کلے ڈٲنہٕ وزہے ہلرٕ بُرتھ چھم

دامہ ژہٕ اگر چھکھ تہٕ بہٕ سنبھالہٕ مہ کُن وُچھ!

درواز تھاوِے وُتھی تہٕ ژہٕ پیرتھ جایہ کرے زول[1]

بوٚ خونہٕ جگرٕ ہالہٕ، شمع زالہٕ مہ کُن وُچھ!

لوٚ دلاگہٕ بکرِ دوٚر[2] تہٕ سَمے گیلہٕ مہ وُچھی وُچھ

کُنہہ وایہ کُرن چھمنہٕ، رٹتھ نالہٕ مہ کُن وُچھ!

چھے وکنہٕ گنڈتھ دَری تہٕ ژہٕ گوٚپی چھہ غزلخوان

نہٕ نہٕ ہرنہٕ کھیلس منزنہٕ دزتھ ژھالہٕ مہ کُن وُچھ!

کم بایہ چھہ فاضل ژہٕ سری کرشنہٕ نظرتل

آسُن تہٕ آسُن بہٕ ژہٕ یتھ گالہٕ مہ کُن وُچھ!

۱۔ زول = چراغاں ۲۔ بکرِ دوٚر = گستاخ۔

गोकुल बं निमथ श्याम गटन छायि वंदय ज़ुव
बादम त खंज़ुर ऑल' छकय थाल² में कुन वुछ

अज़ चानि कले ठाम वछ़ुय मलरि बंरिथ छुम
दामाह चु अगर चख़ त बं सम्बाल में कुन वुछ

दरवाज़ु थवय ब'थ्य त' च़े हर जायि करय ज़्रूल
बो खूनि जिगर हार' शमह ज़ाल में' कुन वुछ

यौद लांगि बुक्र्य दौर त समय गेलि में वुछ-वुछ
कांह वायि करंन छुमन रटथ नाल में कुन वुछ

छय विगनि गंडिथ देयं त चे गूपी छि गज़ल खां
ज़ांह हरन खेलिस मंज़ न दिचथ छाल में कुन वुछ

कम मायि छु "फ़ाज़िल" त श्री कृष्ण' नज़र तुल
आसुम त न आसुन बं चे पथ गाल', में कुन वुछ



देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥ मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥१४॥
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥

گُلالہ!

گُلالا! ذرا بل! گُپالنہٕ دٕرے چھے
جِگر چھَل، جِگر چھَل! گُپالنہٕ دٕرے چھے!

ژٕ بہ چھُے داغ سینس، ہبہ دُکھ چھُم دِلس چھُم
یہ مُشکل ژٕ کر حَل! گُپالنہٕ دٕرے چھے!

وو زٕج نار بُہٕ ہش ژٕ لاگتھ قبا چھُکھ
شہِج ژاڑ دِرہ وَل! گُپالنہٕ دٕرے چھے!

ژٕ بہ مسولَن منز، ژٕ یادا سُمت کر
گُنہٕ اُلفتچ کَل! گُپالنہٕ دٕرے چھے!

گُپالا! یمن سینہٕ دُدی آخ رُودِکھ
تُلکھ مَل تُلکھ مَل! گُپالنہٕ دٕرے چھے!

गुलाला !

गुलाला ! ज़रा वल, गुपालन्य द्रय छय
जिगर छल, जिगर छल, गुपालन्य द्रय छय ।

च़े छुय दाग मोनस म्य दुख छुम, दिलस छुम
यि मुशकिल चु कर हल, गुपालन्य द्रय छय ।

वोज़ ज नार ब्रेह हिश चु लागिथ कवा छुख,
शिहिज चादराह वल, गुपालन्य द्रय छय ।

चु बेह मसवलन मंज़, चु हासिल समुत कर
गन्यर उल्फतुच कल, गुपालन्य द्रय छय ।

गुपाला ! यिमन सोन द'य आख रूदिख,
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालन्य द्रय छय ।



अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ।२५। अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ।२६।
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च । तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।२७।



ٹھنی ژولِ ییمِس گورِ کھییتھ کرشنہٕ گپالا
تَس کھڑنہٕ ڈیکَس دٕرہ تہ دِکَس گونہٕ مَلالا
ماتایہ ژہٕ موصوبہٕ ووٚنے لفظِ "مکھن چور"
اچھ ییتھنہٕ لگِی بالکا! چھکھ حسنِ کمالا

نوٹ:-
۱- ٹھنی = مکھن ۲- گورِ = گوری بای ۳- دٕرہ کھینی = ملالہٕ گژھن ۴- چور = ژور
۵- اچھ لگنی = جسم بد لگنی ۶- حسنِ کمال = Beauty Incarnate

۲۹- سن اب عقل کے لوگ کا حال سن بہت ایسے ہیں جس سے کرموں کے گن

اَنْدَس پیٹھ تِمَے لُکھ مے واصِل گژھان
یِمَن ہُنْز عِبادَت ـ خلوصُک نِشان
نَہ تھاوَن طمع، دِیے، نَہ ژَرکھ، مَن ہُمی
بُہ تھاوے سو کھس مَنْز تِہُنْد جِسم و جان
کرِشن (گیتا ۲۲/۹)

अंदस प्यठ तिमय लुख मे वासिल गछान,
यिमन हुंज़ इबादत- खलूसुक निशान।
न थावन तमाह, दुय, न चरख, मनहमी;
बं थावय सोरखस मंज़ तिहुंद जिस्मु जान॥

थन्य चूरि यमिस गोरि ख्ययथ कृष्ण गोपाला,
तस खंच न डचकस द्रूह त दिलस गत्र न मलाला।
मातायि चें मोसूम वेनुय लफ़्ज़ि "मखन चोर",
ग्रछ युथ न लगी बालुका! छुख हुसनि कमाला।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः। जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय। बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः॥४९॥ बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।



تھَنہٕ ژوٗر

گبوٗ، دوٗد تہٕ گُرُس کیازِ ژٕ بنہ اندیشہٕ کرِتھ چوتھ
بھَگوانہٕ! یہُند باگہ بوٗرِت شیہجارُ لکن دوٗت
زوٗ مَنگتہٕ، جگر مَنگتہٕ ژٕ رُح مَنگتہٕ دِل وجان
ہوصَومہٕ لگےَ کیازِ اَسی ژورِ مَکھن کھیوتھ!

۱۔ عقل اندیشہٕ کرِتھ = کھوٗژی کھوٗژی ۲۔ رُح = آتما ۳۔ مَکھَن = تھَنہٕ

پَرکھ یوٗد کرٛشنہٕ لیلا گیان لارِ

اَہنکارُک یوٗہیے سیماب مارِ

یہ حاصل گوٗی تہٕ سپدکھ کیمیاگر

یوٗہیے گوٗن ساگرَن منٛز تارِ تارِ

परख योंद कृष्ण लीला ज्ञान लारी;

अहंकारुक योहय सीमाब मारी।

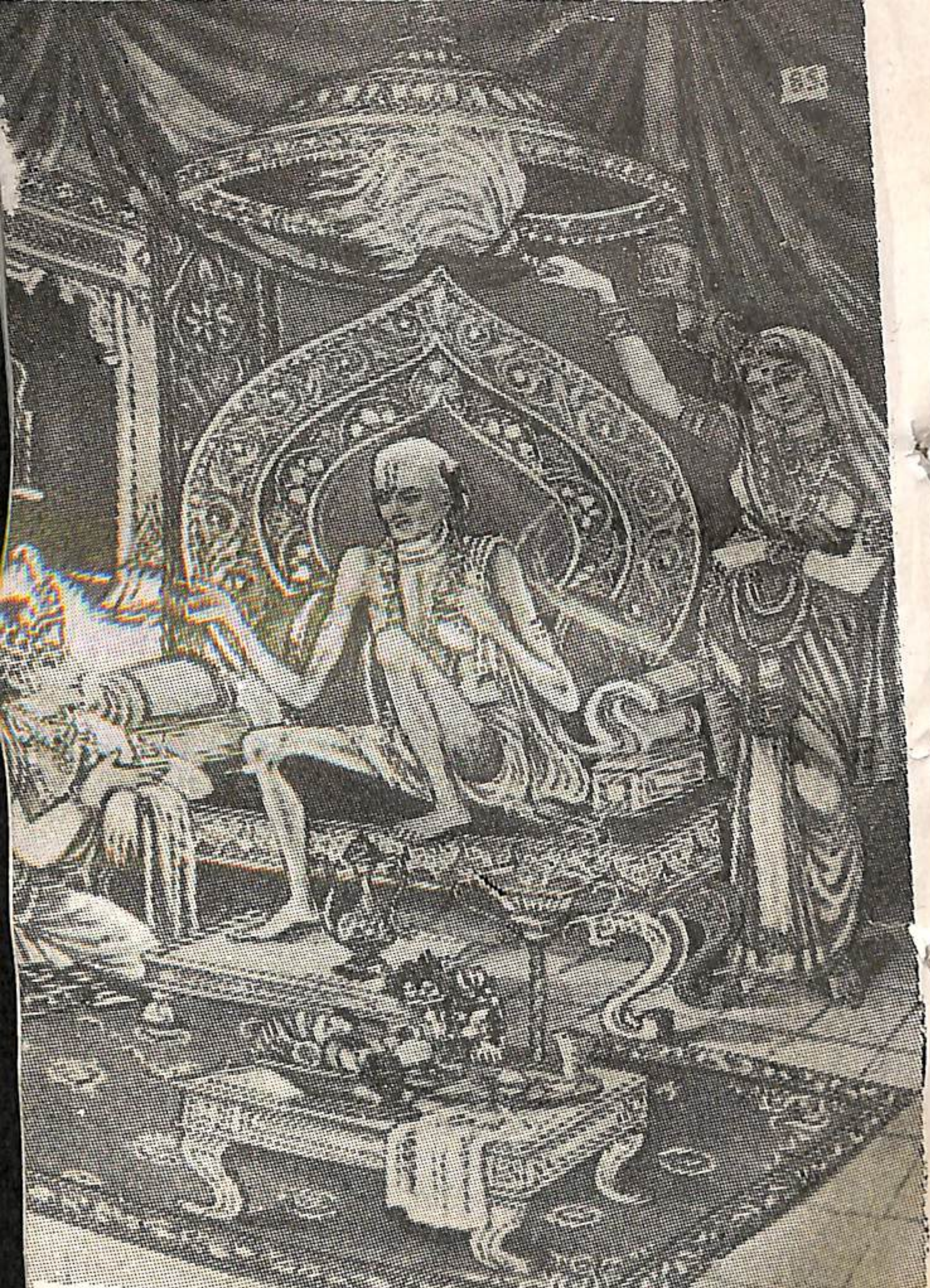
यि हासिल गोय त सपदख कीमयागर,

योहय गोण सागरन मंज़ तार तारी॥

ग्यव, दुद, त गुरुस क्याज़ि चें अंदेश करिथ चोथ,
भगवान! युहुंद बागि ओस्त शेंहजार लुकन वोत।
जुव मंगत, जिगर मंगत, च रुह मंगत दिलो जान,
मोसूम! लगय क्याज़ि असो चूरि मक्खन स्योथ॥

کران پوزا کرشن جی دوستانس
ہشر تس نش — ہشر یارس تہ یارس!
سداما اکھ فقیراہ تے کرشن شاہ
مگر وچھتو یمن دوٚن منز فرق چھا!
وفاداری، دیانت، نیک سیرت
تمامن باگراون پوز محبت
خلوصک شرہہ تہ جذبچ جاذبیت
کرشن جی چھے کران داسن عنایت
اکتھکن نے۔ مہابھارت بیتھکن!
اکتھکن تھنی قتل، غارت بیتھکن!
چھ دوشونی منز دوان مکتی سہ لوکن
یتھے بخشاں ست آگاہی چھ بھگون
بجر گوی تہ عرفانک تھزر یی
تھواں قائم یتھی گون چھے کرشن جی

करान पूजा कृष्ण जी दोस्तानस,
हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस।
सुदामा अख फ़कीराह तय कृष्ण शाह,
मगर वुछतव यिमन दोन मंज़ फ़रक छा।
वफ़ादारी, दियानत, नेक सीरत,
तमामन बागरावान पोज़ मुहब्बत।
खुलूसुक श्रेह तु जज़बुच जाज़िबियत,
कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत।
अकिथ कुन 'नय'—महाभारत बियिथ कुन,
अकिथ कुन 'थन्य'—कतल, गारत, बियथकुन,
छु दोश्वुन्य मंज़ दिवान ओदार लूकन,
यिथय बखशान सत आगाही छु भगवन।
बजर गव ई तु ईर्फ़ानुक थज़र ई।
थवान काइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी।



भगवान्‌ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की।



कृष्ण

کُرشن سُداما

کُرشن مہراج اکھ بالک اَوستھا
میٚتراوس بالہٕ پانٛک تٔس سُداما

یمَن اوس شُریلہِ منٛز یارانہٕ یارزٕ
کرَان تتھ پیٹھ رشک آس پانہٕ یارزٕ

سُداما عمرِ منٛز بہرونہکن لیکان گۓ
کُرشنِ اوتار، تٔس پیٹھ ایشوٕر دۓ

سُداما اکھ گرٛہستی سادھ بلکل
کُرشنِ اوتار: مہراج ماکِ کُل

کُرشن اوتار گو مشہورِ عالم!
یوان آسی درشنس تٔس سادھ کم کم!

کُرشن سُداما قصہٕ چھہ پزِ دوستی تہٕ یاداوآری ہند اکھ تاریخی تہٕ یوشون انٛہ لوٗ۔

۳۱- تراَ فرض کیاہے رکھ اَس پیٹھ نظر نہ جی ڈُلمگا اَس کی تکمیل کر

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥

सुदामा



कृष्ण महाराज अख बालक अवस्था
मित्र ओस बालु पानुक तस सुदामा ।

यिमन ओस शुर्यलि मंज़ यारानु, यारज़,
करान तथ प्यठ रशक ओस पानु यारज़ ॥

सुदामा वुमरि मंज़ ओंह कुन पकान गंय
कृष्ण अवतार तस प्यठ ईश्वर दंय ।

सुदामा अख ग्रहस्ती साद बिल्कुल,
कृष्ण अवतार महाराज मोलिके कुल ।

कृष्ण अवतार गव मशहूरि आलम,
यिवान आंस्य दर्शनस तस साद कमकम ।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि । धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।

سُداما وۆتھ مُلاقات گوٚڑھ مبہ سپدُن!
نصیبس لبکھتہٕ ہیاٰئنس کرشنہٕ درشُن!



تیاٰری کٔر سُدامن زیٖٹھہِ سفرٕچ ۔ ژُلن سیٚتی تحفہٕ: پھٹجہ بیلی توٚمُلچ پکان گوٚ تھاکھ کڈان گوٚ بڑو زیٖنہ پکان گوٚ ۔ کڈان وَتھ اُلفتچ زنہ مانحھکانن گوٚ

کرشن وُچھنُک تمنّا تس دِلس پیٹھ
تہٕ اُتھی شوقس اندر ووت مَنزلس پیٹھ

اچانک کرشنہٕ لالس گوٚیہِ گوٚشن ۔ سُداما از یِیم مَن چھُم ہبہ توٚشن ''
سُداما آو دربارس اندر ژاو ۔ کرشن مہراج یورَے اَنِہٕ تَس دِراو

رلوابتھ چھُ زِ سُدامس اوس تحفہٕ پھٹجہ منز سرَ ہیتھ تتہ چہ علاقاٰئی زبانی منز تندُٹُل وَنان چھ۔

सुदामा वोथ मुलाकात गोंछ् में सपदुन!
नसीबस लेखतु म्योनिस कृष्णु दशुन।

तय्योरी कर सुदामन जेठि सफरुच,
तुलुन सूत्य तोफु फुटजा "बेल्य तोमलुच"।

पकान गव, थक कडान, गव ब्रोंह पकान गव,
कडान वथ उलफतच जांह मा थकान गव।

कृष्ण वुछनुक तमन्ना तस दिलस प्यठ।
तु अथ्य शोकस अन्दर वोत मंज़िलस प्यठ

अचानक कृष्ण लालस गव यि गोशन
सुदामा अज़ यियम मन छुम में तोशन॥

सुदामा आव दरबारस अन्दर चाव,
कृष्ण महाराज योरय अननि तस द्राव,



अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः। निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

اوِنُن با شان و شوکت، پور حشمت - یہ چھُسنا بالہٕ پانٛک شرٛہہ تہٕ اُلفت

سُدآما کھور کرٛشنن پانہٕ تختس

کران سارٕی رشک تس نیک بختس

بیپارٕی تختس بِہتھ اوتار وقتک - بیپارٕی کنٛہ چھُس سُدآما یار وقتک

اکِس سیتی اکھ بِہتھ لول بآگراوان - یہ ڈیشتھ چھِی وزیرن ہوش راوان

سُدامن بیاکھ تہٕ ہیچ ڈالِ کڈ نٔنی

کرن پیش کرٛشنہٕ لالس یُس تھنی تھنی



کرٛشن لالس موٕ تھ کیتھ سادہو آو - کھبوان گو "ہہ" کران آسس نہٕ ٹھہراو

۳۷- مرے گا تو پائے گا جنت میں گھر اگر جیت جائے تو دنیا ہو سر

ओनुन बा शानु शौकत पूरि हशमत।
यि छुसना बालु पानुक स्नेह त उलफ़त।

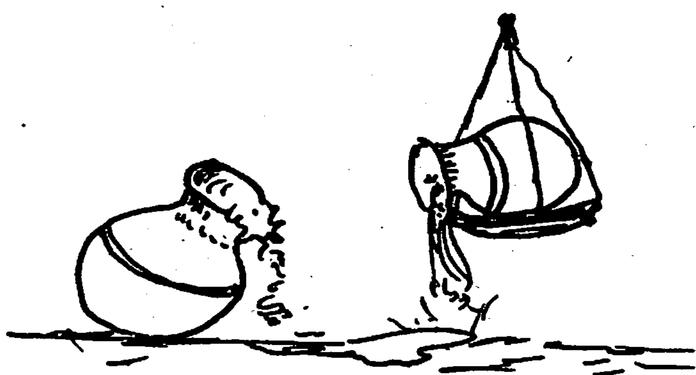
सुदामा खोर कृष्णन पानु तख़्तस,
करान सारी रशक तस नेक बख़तस।

यपोर्य तख़्तस बिहिथ अवतार वक्तुक
हुपार्य किन्य छुस सुदामा यार वक्तुक।

ओकिस सूत्य मस बिहिथ लोल बागरावान
यि डोशिथ छी वंज़ीरन होश रावान।

सुदामन ब्योल्य तोमलुच डाल्य केंड नेन्य
करुन पेश कृष्णु लालस युस थंनी थंन्य।

कृष्ण लालस मोठा ख्यत स्वाद छुव आव
ख्यवान गव, माह करान आसस नु ठहराव।



तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥ सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

کرشن لالَن پرزٕنس سورٕ حال اَحوال ۔ زمیٖن جایِن زرٲعت روٗپیہ تہٕ مال
سُدامہٕ وَنہٕ لوٗگ، بس ڈولہِن چھَم ۔ چھُ اَتھی مَنزٕ سُتہ گُذران ساتہ کیو دم

سوٗ خن زیٚٹھان کے دفتر بُرِتھ آئے
اَتتھ پیٚتھکُن نہٕ روزان راز سرسائے



سُدامہ کرِشنہٕ لالس سیٖتی ہمدَم
سُدامہ تَس نہٕ گرٕ بارُک کِہنے غم

سَمے کاٗفی گُرٕ ژھاں اَتھ کارٕ بارَس ۔ ہوان روٗخستہ چھُ آخرٕ یارٕ یارَس

بہ نہ کوشش تی ہو اس ییٚن کوٗی رایگان ہو رستے ہیں اُس کے رکاوٹ کہاں

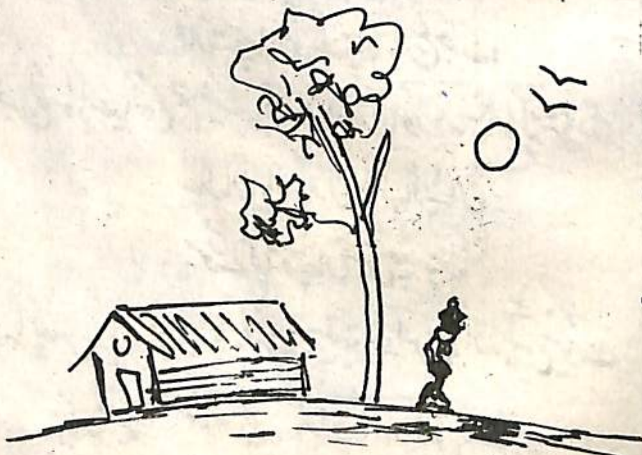
कृष्ण लालन प्रछुस सोर हाल अहवाल,
ज़मीन, जायुन, ज़िरात, रोपयि तय माल ।

सुदामा वननि लोग "बसडोकुहन छम,
छि अथ्य मंज़ सथ गुज़ारान साथ तय दम"।

सोखन जे़ठान गेय दफ़तर बेरिथ आय
अत्यथ पथ कुन नु रोज़ान राज सिरसाय ।

सुदामा कृष्णु लालस सूत्य ह्यम दम
सुदामा तस नु गरबारुक कुँहंय गम।

समय काफ़ी गछ़ान अथ कारबारस,
ह्यवान रोख़सथ छु आ'खु'र यार यारस।



नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥४२॥

کراں رۄخصتھ کرِشن جی تس فقیرس ۔ سُدامس ظۄن زِ شۄرِ آسن مہ بیکس
پھران کوتہ سُداما کرِشنہ لاگن ۔ سوٲری بیٹھ کھستھ دراو اَز گرس کُن

دزاں برونہہ برونہہ چھِہ سونٕی دف تہٕ ڈُم ڈُم
وناں ساری ساٲری سُداما راجہ ہو چھُم

وُلتھ زر بفاتہ سونہری تاج برسر ۔ سُداما اَز شہن ہُندِ شہ برابر

گرس کیتھ ووت گامس منز سُداما
خبر کیاہ چھس زِ گامس منز سپد کیا

وُچھن گامکی کراں تس پونپیرنی گیتھ ۔ اُمس تعظیمہ سان ناوان گرچ وتھ

ہنہ برونہہ کُن یکیتھ ڈیشن عمارت
عمارت چھا! سورگ[2] چھا باغ جنت

خبر لٔج دۄلِ عیالس تم زُستھ[1] آی ۔ دوان زن حور غلمان سورگہ منزی دراو

سُداماں پانہ حاران خواب ڈیشان
یہ سورے کیا وچھاں چھس چھیسہ زاناں

بُہ ماچھس رۄد مُت بیگانہ گومُت ۔ ییتھ ڈُکس چھُ اَز پیلس[3] بنیو مُت

۱۔ زُستھ = ہجوبہ کرِتھ۔ ۲۔ سورگ = جنت ۳۔ پیلس = شاہی محل۔

करान रोख्मथ कृष्ण जी तस फ़कीरस
सुदामस ज़ोन जि शुयं आसन में बेकस।

फ़िरान कोताह् सुदामा कृष्ण् लालुन
सवांरी प्यठ खंसिथ द्राव अज़ गरस कुन।

वज़ान ब्रोंह ब्रोंह छे सुरनय दफ़ त डुम डुम,
वनान सांरी सुदामा राजि ह्युव छुम।

वेलिथ ज़रबफ त' सोनहंर्य ताज बर सर,
सुदामा अज़ शहन हुन्द शाह बराबर।

गुरिस ~~क्यथ~~ वोत गामस मंज़ सुदामा,
खबर क्याह छस जि़ गामस मंज सपुद क्याह

वुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,
अमिस ताज़ीम् सान हावान मरुब वथ।

हना ब्रोंह कुन वंकिथ डोशन अमारथ
इमारथ छा! स्वर्ग छा! बागि जनथ!

खबर लंज वंल्य अयालस तिम चंसिथ आय,
दवान ज़न हूर् गिलमान स्वर्गु मंज़ द्राय।

सुदामा पान् हांरान खाब डेशान,
यि सोरुय क्याह वुछान छुस कैंह तुस न् जानान।

ब' मा छुस रोवमुत बेगान् गोमुत,
येत्यथ डोकस छु अज़ पैलस बन्योमुत।

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥ भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।

وچھِن آشیٖنہِ بہتھ مَنٛز محلہِ خانس
کَران پوٗزا، بَران لول کرٛشنہٕ لالس

سُدامَاچھس دِپان آخرٕ یہِ کُمی کوٗرٕ؟ - یہِ کُمی پرٛشَن ہیہِ پرٛزھنے لول یتھ بوٗزٕ؟
وُزھس آشیٖنہِ امی کرٛشنَن یوٗرکوٗل - وَندلس شٔری باتٕ ہالیٖن موٗل تے موج
عِمارَت، باغ، اندر، فرشِ مخمل - تمی کرٛیٛژھ عِنایت یوٗت جَل جَل
کرٛشنِ لیس بیٚیٹھ کران چھُے مہرٕبانی - یِنان سوٗن ہیر لوٗن اِنسانِ فٲنی

वछिन भाशन्य विहिथ मंज़ महलु ख्वानस,
करान पूज़ा बरान लोल कृष्ण लालस।

सुदामा छुस दपान ओंखुर यि कम्य कोर?
यि कम्य पुरशान में प्रछुनय लोल युथ बोर।

वछुस भाशन्य "अमो कृष्णन बोरुम लोल,"
वन्दस शुयं बाच् माल्युन मोज तय मोल।

अमारथ, बाग, मन्दर फर्शि मखमल,
तमी कर यिछ अनायथ यूत जलजल।

कृष्ण यस प्यठ करान छुय मिहरबानी,
बनान सुन हेरि बुन इन्सानि फ़ानी।

اکھ سُداما چھا یمِس پیٹھ کرٕ دیا موٗلی دٲرن
اکھ دِلہ چھا یتھ بسکیں درٕ تہندۍ کنول چرن
یوٗد یٚژھکھ پانس اندر تھاون کرشن پراون کرشن
شرطِ اوّل اتھ مقامس چھے بٕنۍ زرٕ وچ لگن

अख सुदामा छा येमिस प्यठ कर दया मोरली दरन
अख दिला छा यथ नुं बसकीन दर तहंद्य कंवल चरन
येदि यछुख पानस अन्दर थावुन कृष्ण प्रावुन कृष्ण
शर्ते अवल अथ मकामस छुय मन चे, रह्ने चलगण।

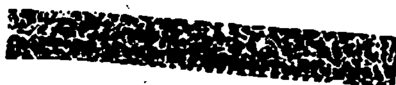
यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।



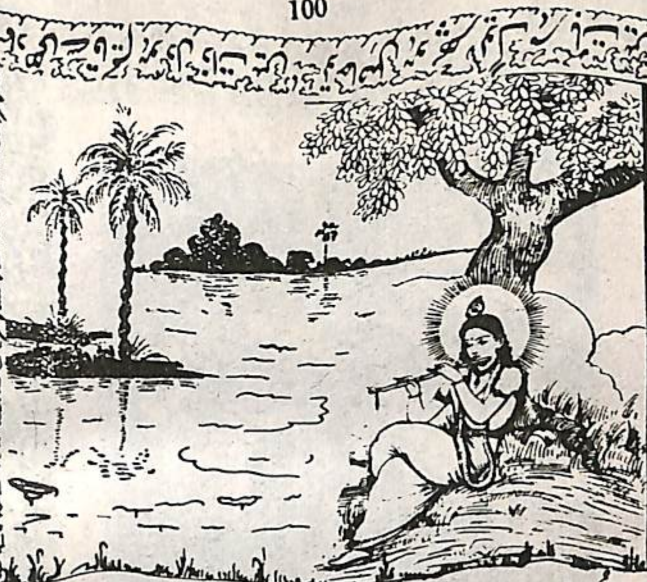
کرٛشِن گو دوٚن سمُت گرٛژھنک سمندر
اوٚتتھ وٲتتھ بنان یِتھ قطرِ ساگر

غریبن ، مُفلسن ہُنٛد مالؔ گوپال
یِمن کوچھ ژھر تِمن ہُنٛد لالؔ گوپال
یِمن زنمس اندر پیترُن پیوان یچھ
تِمن پُرشن سیٹھاُرت فالؔ گوپال

ग़रीबन, मुफ़लिसन हुंद माल गूपाल ,
यिमन कोछ छ्वर तिमन हुंद लाल गूपाल ।
यिमन ज़नमस अन्दर प्यतरुन प्यवान यछ,
तिमन पुरुषण स्यठा रुत फ़ाल गूपाल ॥



कृष्ण गव दुन ममुत गछनुक समन्दर
ओतथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।



گلن ہند سمت پھانپھلاوان کرشن جی

عجب گلستانہ بناوان کرشن جی

یمن آسہ پتر پیچ تہ پنز پچ دلس چھ

تمن امرتکی پیالہ چاوان کرشن جی

کرستانی، پارسی تہ ہندی، سکھ، مسلمان

نظر کنی یمن بیٹھ چھ تراوان کرشن جی

دوہ دس ہاشیکرس منز تفاوت یشارہ

ہشر آدنک چھے رلاوان کرشن جی

۱؎ فرق

۵۲۔ جو ہو عقل آزاد جنجال سے نکل جائے تو موہ کے جال سے۔

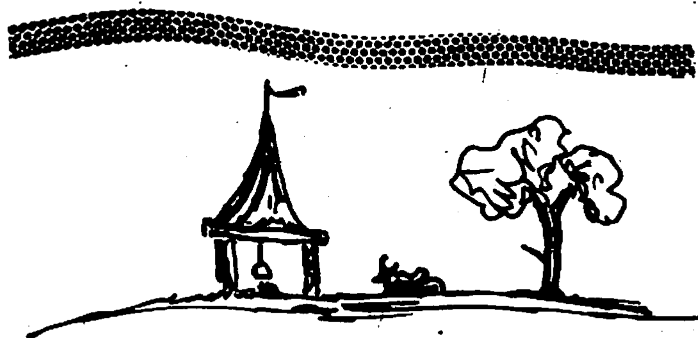
कृष्ण जी

गुलन हुंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी।

यिमन आसि प्रेयमुच त पज़रुच दिलस छिह
तिमन अमरितुक्य प्यालु चावान कृष्ण जी।

किरस्तान्य, पारस्य त हेन्द्य सिख मुसल्मान
नज़र कुन्य यिमन प्यठ छु त्रावान कृष्ण जी।

दोदस शेकरस मंज़ इशारा तफावत
हिशर आदनुक छुय रलावान कृष्ण जी।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
अर्जुन उवाच
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव। स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥

دُیِ ہُند زَہر ، تفرِقہ زھیٹ الآیش

چھ موٗرلی بجاوِتھ مِٹاوان کرِشن جیِ



کتھن مَنٛز تھزر چھُس تہ موٗرلی اثر چھُس

رَلِن ییم نہ زَنہہ تِم رَلاوان کرِشن جی

یہ متھرا ، یہ جمنا ، یہ گنگا ، یہ رادھا

سَمے گو ہکہ تو نہ گاران کرِشن جی

سِیہ ہرد والیو تمس نِش شوزر لوٗب

کھوٗٹس کیمیا چھُے بناوان کرِشن جی

بران لول گوٗپی تمس شوزرِشانے

تِمَن مَنٛز چھُہ دوہ دِہَن گزاران کرِشن جیِ

شری بھگوان کا ارشاد ؎ سُہ مرکب دوہ ییمہ ستی کھوڈ دعا سون چھ بنان

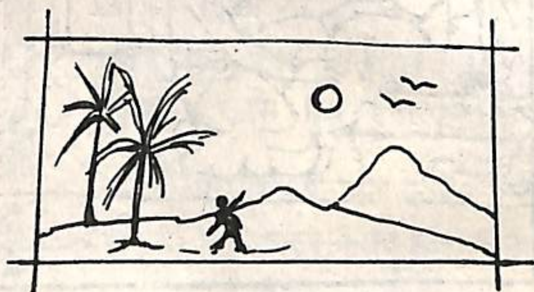
दुई हुंद ज़हर तफ़रुकुच छ़ेंट अलांयिश,
छु मुरली बजांविथ मिटावान कृष्ण जी।

कथन मंज़ कवर कुस तु मुरली असर छुस
रलन यिम नु ज़ाँह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तमिस निश शो़ज़र लोंब
खोंटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तमित श्रोचि़ शाने,
तिमन भंज़ छु दो़ह द्यन गुज़ारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।

یِمِس آسہِ وَس زاعمژ لولہِ نارَن ہُے
بلاشکھ تُمِس پَرزِہ ناوان کرٛشِن جی
لَچھس حُب وَچھس مَنز چھُ تَس شولہِ ناوان
بیابان ذَرَس چھے بناوَان کرٛشِن جی
یِمَو پُونپرِ نِ لگتھ کَرِس سِریہِ پانس
تِمَن چھُے پَتُن جلوٕ ہاوَان کرٛشِن جی



مَنٛنج رٲستی نظرِ لوٚز آنہٕ ہاوان ۔ کرٛشِن جی سُدامہ، سُداما کرٛشِن جی

۵۸ - ذرا سا بھی دبے کوئی چھونے کو چھیڑ تو لیتا ہے فوراً سب اعضا سکیڑ

ہولی

اَز چھہ سَنسارکۍ پُرُش ہولی گِندان
فِطرتُک اَنگ اَنگ رَنگَن مَنز رَنگ بَران
کرشنہٕ! یِکھنا لُکھ چھہ آمِتۍ وولسنس
سارِنۍ رُوحس اَندر موٗرلی گرزان

अज़ छि सन्सारकय पुरुष होली गिन्दान
फित्रतुक अंग अंग रंगन मंज़ रंग भरान
कृष्णु! यिखना लुख छि आमुत्य वोलसनस,
सारिनुय रूहस अन्दर मोरली ग्रज़ान

यमिस आसि वस ज़ाजिमच़ लोलु नारन
बिलाशक तमिस परज़ुनावान कृष्ण जी।

लछ़स हुब, वछ़स मंज़ छु तस शोलुनावान,
बयाबान ज़रस छुय बनावान कृष्ण जी।

यिमव पोम्परिन्य गथ करिस सिरियि पानस,
तिमन छुय पनुन जलवु हावान कृष्ण जी।

मन्'च रास्ती नज़रि पो'ज़ ओनु'हावान
कृष्ण जो सुदामा, सुदामा कृष्ण जी।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥५९॥
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः॥



تسند سرٛہیہ پٔتھ وڈرنین وحشین تام
ژھینا چھا تمن ییم چھُ پالان کرشن جی

حسد خون ہار، خشمہ ہوت نار ژایان
چھُ زنگنک زنگت وو ذٕ ژہ پیاران کرشن جی

یمن تاپہ کرالو چھ ہیٔژ شوٗر کرمژ
تمن سیکہ لین بیٹھ چھُ باران کرشن جی

چھیلتھ ژھن ییمہ کام، کرود، موہ، اہنکار
پوہتر تمن جان جانان کرشن جی

۱۔ شہوت ۲۔ ژکھ ۳۔ طمع ۴۔ غرور ۵۔ سرٛہیہ: پیاد

۶۱۔ حواس اپنے رول اور لگا مجھ میں دل تو سرشار ہو یوگ میں

॥ सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

तसुन्द स्रेह पशन, वुडवुन्यन, वहशियन ताम,
छ्यनह छा तिमन यिम छु पालान कृष्ण जी।

हसद खूंखार, खशम होंत, नार चापान
छु जगतुक जगत वोन्य चें प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे मेंच शोर करमच
तिमन सेंकिल्यन प्यठ छु बारान कृष्ण जी।

छेलिथ छुन यिमव काम, क्रूध, मोह अहँकार,
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी।



क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥ ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते



یمَن کَنہہ نہٕ آسان یمَن دِل پریشان تمَن بیکسَن ہُندٕ چھُ سامان کرشنِ جی

یہ ژھُنی ہیو مُجسَّم چھُ حُسنک جمالک
چھُ فاضِل دِلَس منز بَساوان کرشن جی



۶۲۰۔ جو کرتا ہے محسوس دُنیا کی سیر نہ اُلفت کسی سے ہے جس کو نہ بیر

چھُ برہمن دَھرم - گیان ضبط، راستی
لبنی - حق شناسی تہٕ پاکیزگی
تغوفُل ترک - عیش وعشرت حرام
طمع، ژکھ نہٕ تھاوٕنی چھلنی مَن ہمی
(کرشن گیتا ۱۸/۴۲)

छ ब्राह्मण धर्म—ज्ञान ज़ब-त रास्ती,
लबुन्य हक़ शनासी तु पाकीजुगी
तगोफ़ुल तरक ऐश व अशरत हराम,
तमाह, चख न पावुन्य छलुन्य मनहंमी
(गीता)

यिमन कॉह नु आसान, यिमन दिल परेशान,
तिमन बेकसन हुंद छ सामान कृष्ण जो।
यि थंन्य ह्योव मुजस्सम छ हुस्नुक जमालुक
छु फाजिल दिलस मंज़ वसावोन कृष्ण जो।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥६४॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥६५॥
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्॥



بانسری ہُند ساز گوپیائن کَنَن

چھُس اوٚوے کنی کرشنہٕ شبدن کَن تھَوَن

کرشنہٕ شبدو بخشُہٕم گنگایہ جَل

تھَہ زہنِم اتھ منٛز کوٗرِم شوٗد تَن بَدَن



نوٹ:۔ ۱۔ شبد = لفظ ۲۔ بخشُہٕم = دِتُم ۳۔ جَل = آب، پونی ۴۔ شوٗد = خالص



مہربانی کرے کرشنن سداما! ترچھکہ زگتس اندر لوڈ نیک بختا
بنان چھایتھ دیالو یار یارس ۔ چھ کرشنن دوستی امرت سراپا

मिहरबानी करय कृष्णन, सुदामा !
च़ छुख जगतस अन्दर बोड नेक बख्ता
बनान छा युथ दयालु यार यारस
छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा ।

बांसुरी हुन्द साज़ गव ग्यानन कनन
छुस मवय किन्य कृष्णु शब्दन कन ववन ।
कृष्णु शब्दव बखशुहम गंगायि जल,
बाह कूनिम मव मंज कोरुम शोद तन बदन

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते ।



بالہٕ پانس لگی تنہٕ ازمیون آے
زۄ وندے! ہو رلی تلا از کرشنہٕ وارے

چانہٕ حُسنک پرتوہ دیدن کُشش
چون پیکر جذبہ : پترنیچ رسریہ کرا ے

چاۓ حشمت، چاۓ عظمت، چاۓ کتھ۔ کنہہ نہٕ سمیس منز رہ ہوٕ ئی ساۓ را ے

عظمت = بحر سۓ = وقت

سمندر میں کے غائب ہوں دریا ہزار رہے گا وہ لبریز اور با وقار

मोरलीदर

बालु पानस लंग्यतनय अज़ म्योन श्राय,
ज़ुव वन्दय ! मोरलो तला अज़ कृष्णु वाय ।

चानि हुसनुक परतवा दोदन कंशिश
चोन पयकर जज़बु प्रेयमुच सिर्यि श्राय ॥

चोन्य हशमत, चोन्य अज़मथ, चोन्य छव,
कांह न समयस मंज़ चें ह्युव यी सोन्य राय ।

(१) श्राय---वांसि हुंद ग्रख, (२) परतव—जलव, दोद – अछ,

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥
विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।

چانہِ سوٚرلی ہٕنز درے! اَوتار ژٕے

داس پیارٕں چھی ژٕ اَز کاسُکھ انیاے

اکھ دَمہٕ چَشمَن اَندَر کر تَم قرار!

عُمر لوسَم ژٕئی وچھان کر ہیون پاے

پاے=چار

ژٕے چھُہم پیرِیمک صَنَم، روٚحک ہرشِ

ہرش=سردار

سارِنے لول بآ کراوُن چوٗن داے

داے=مشہور

یوٚت ژوٚر سو ندر بنٲوِتھ چوٗن سوٚکھ

حآرتن گو پانہ کآریگر خوٚداے

ساسہٕ بدی رنگ بدلوٗنی روٚدم زنَم

یس نروٗس مَنز چھکھ بٔستھ سے اکھ ہواے

چانہٕ پُترِ یچھ چھہٕ منس لٔجمژ سہ چھم

لولہٕ برِتیو! فاضِلس چھے چانی ماے

ماے=پریم

شری بھگوان نے فرمایا

ساتویں ادھیائے

ایسن ارجن! اُنماں مجھ پائے ہوئے تامری ذات میں لو لگا...

चानि मोरली हुंज़ द्र्'य अवतार चय,
दास प्रारान छी च़ अज़ कासुख अन्याय ॥

अख दमाह चश्मन अन्दर करतम करार,
उमर् लोसम चेंय वुछान कर म्योन पाय।

चय छुहम प्रेमुक सनम, रूहुक हर्ष,
सारिनय लोल वांगरावुन चोन दाय ॥

यूस चोंर सोन्दर बनांविथ चोन मोख,
हांरतन गव पानु कांरीगर खोदाय।

मासवंद्य रंग बदलजुन्य रूदिम जन्म,
यस जुवस मंज़ छुख बेसिथ सुय अख 'बेवाय ॥

चानि प्रेमुच छिह्य मनस लंजमुच मे छम,
लोलु बेत्यों। 'फ़ाज़िलस' छय च्यांन्य माय।

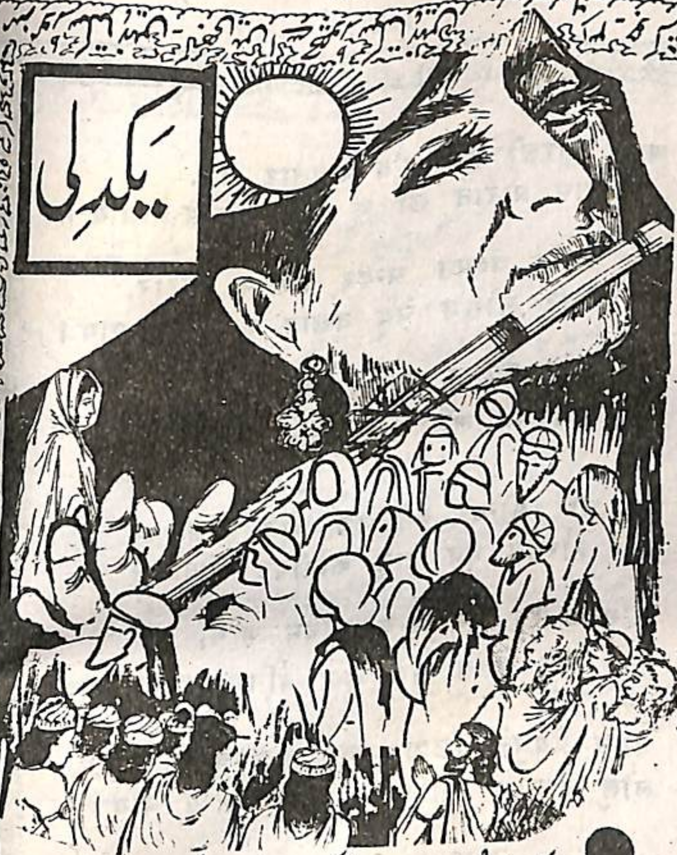
(१) प्राय---वांसि हुंद त्रख, (२) परतव—अलव,
दोद – अछ,

(१) पाय—चार, (२) हर्ष— सरूर,
(३) दाय—मशवर, मोख—बुथ, (५) माय—प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः।



یکدلی ہُندُ شہ گیان چھے بانسری
یَس کَنَن گوِ وَننہِ لوٗگ چھِ ہری
مَن پوِٗ ہیتر یَس سُپُدلس سے چھُ شاہ
کِیاہ مُسلمانی کرِس کِیاہ کافری

کُنی یَس نظر تَس چھ گیانی وَنان!
تمِس نِش نہ چنڈال، برہمن زٕ جان!!
دُئی ہُند سیٹھاہ دوٗر احساس تَس!
سُہ گاو، ہوٗن تے ہوٗس چھ یکسان وندان

(گیتاجی ۱۸/۵)

گیتا ۱۸/۵

कुनी यस नज़र तस छि ज्ञानी वनान
तमिस निश नु चंडाल, ब्राह्मण ज़ जान।
दुई हुंद स्यठाह दूर इहसास तस,
सु गाव, हून, तय होस छु इखसान व्यंदान
(गीता)

यकदिली हुंद शह ग्यवान छय बांसुरी
यस कनन गव वननि लोंग "जयजय हरी"।
मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,
क्या मुसलमांनी करयस क्या का'फ़िरी ॥

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः । सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति । तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् । यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥



بالہٖ پانس لاگہے جامے چھُتی

کرٛشنہٖ لالو! بس ییٚتی سمکھہ تیٚتی

پانہٖ از گنگا یہ ہُند جل بأگراو

چاوتکھ اَمرِت ہبہ ہوی ترٛیشے ہتی

یم نِشاطس، شالمارس پوس چھلی

زاری زاری تم لاگہے کارے ہتی

یہ مٹی یہ پانی یہ آگ اور ہوا یہ آکاش دُنیا یہ چھایا ہُوا

وجودک سر منچ روشن سبیل بن
ذرا ظاہر مشر — اندری دلس سن
کرن آور پنن آسن نہ آسن
دلچ حرکت بناون کرشنہ سمرن

वजूदुक सिर, मनुच रोशन सबील बन
जरा जाहिर मशर, अन्दरी दिलस सन।
करुण आवुर पनुन आसुन नं आसुन
दिलचि हरकथ बनावुन कृष्णु स्मरण ॥



कृष्ण लालो

बालु पानस नागह्य जामग्र छेती,
कृष्णु लालो बस येंती समस्क तंती।

पानु अज गंगायि हुंद जल बांगराव,
चावनस अमृथ म्य हिव्य त्रेशे हेती ॥

यिम निशातस शालुमारस पोश फोल्य,
चांयं चार्य तिम लागह्य कारे पंती।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।

نورِ آگُر سرِیہ ہو کھ چھۓ اَنہٕ پوٚٹ
ہیرِ لوٚبن پانس پَرٕون ہنٛدی گہہ دُتھِ

خورِ ہنٛد ہیکہٕ تہٕ تھٔنی ہیوٚ چھۓ شرِیہ
نالہٕ رٔٹِھ ہٕتھ اَکھ دَمہٕ رۄزتم اُتی

چون آکار چھُم سَتَن بَرنَن ہہٕ آش
یم شعورِ کی بَرٕ دۄب ہے تھوٚی مے دِتھی

دِل چھ بھرسٹ تے کرودھ از سمیک سُبھاو
ییر اَکھ اَکی سُنٛد تھوَان سمیکی مَتی

چھی فدا پادَن گُمتی پمپوشہٕ سَر
کھٕل چھ آسَن ہیٛتھ بِہتھ آلَے کَتی

اَکھ ہُنٛز ہو رٕلی دِرن آدیش لوٚز
فاضلا! سَت دۄپ چھ داسَن ہنٛد نیتی

नूर् आगुर- मिर्यमिमोख छुम ओनु पोंट,
हेरि बोन पानम प्रवन हुन्द गाह वेथो ॥

हरि हुन्द पैकर तु थॅन्य ह्यव छुय शरीर,
नालु रटुहथ अख दमा रोज़ुम मंती ॥

चोन आकार छुम सतन वरन्यन में आश,
यिम शऊरुक्य वर दोहय थव्य मय वेथो ।

दिल छि ब्रष्ट तय क्रोध मज़ समयुक सोवात्र,
वॅर मल अॅवयसुन्द थवान समयिवय मंती ॥

श्री फ़िदा पादन गोमुत्य पम्पोशि सर,
ल्यख छि मासन ह्यथ बिहिथ आरय कॅती ।

"अख बॅनिव" मुरलो दरुन आदेश पोज़,
फाज़िला ! सत दोप छु दासन हुन्द पंतो ॥

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ । जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥ रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।



رادھا ونان چھ ناتھس۔ دود بانچھ ہیو زبہ پیکر
درشن میہ کالی دکھنا! چھم چانہ دور رگ[1] شر
اچھ ہیانہ لوسہ وانس۔ گنگایہ بیٹھ زبہ پیاران
مورلی شبد گرھان چھیم۔ گوشن[2] زیتھ بٹھس تر
اندی اندی زبہ رقصہ باپتھ۔ کمی مور کھیول انتھ تھو
یم چانہ لولہ پیرتھ۔ رنگین پیر تہ زیور[3]

۱۔ دور بر = فراق ۲۔ گوشن = کنن ۳۔ زیور = گہنہ

۱۰۔ سن ارجن نہیں ہوں زیج ہر ہست کا ہیں وہ زیج ہوں جو نہ ہوگا فنا۔



राधा वनान छें नाथम—दुद, मांछ ह्यु व चे पैकर
दर्शुन में कात्य दिखना! छुम चांनि दूरिरुक शर।

मंज़ म्यानि लोसु वांसन— गंगायि व्यठ चे प्रारान
मुरली शब्द गछ़न छ़िम गोशन चुं यथ बंटिस तर.

मन्द मन्द चे रकसु वापथ कंम्य मोर स्योल मंनिथ थोव
यिमचानि लोलु पूरिथ रंगीन पर तु जेवर॥

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।।१०।। बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये । मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ।।१२।।

نَے

(نے چھ بہانے .... " مورلی شُداہ اَسہِ گوکُلن وَنن چھ رادھا کرشنہٕ ہے آو ۔)

کُس تام وایان ! اُلکھ چھ دیان نَے چھَ وزان نے
گوپالہٕ ژرٕ یم ویدی چھ دیان
نے چھ بہانے ـــ ـــ ـــ نَے چھ بہانے

ـــ ـ ـــ

تصویرِ آتش خانہ مجاز َس چھ دِوان ڈول
مَنز نالہٕ برٔ ہن طورٕ سنگرُ
تو دزان نے ـــ ـــ ـــ نَے چھ بہانے

ـــ ـ ـــ

نے نغمہٕ شیرینی ۔ ہَن چھ برٔمان ۔ زٕ چھ زوان کل
یتھ نغمہٕ براُن معرفتک
سرٕ ہہ چھ بران نے ـــ ـــ ـــ نَے چھ بہانے

ـــ ـ ـــ

۱۳۔ کیوں سے ہوئے وصف تینوں عیاں ، ہوئے جن سے گمراہ اہل جہاں

(नय छ वहानय

"मुरली शब्दा गव असि कनन
वनन छि राधाकृष्ण है आव"

कुस ताम वायान! लुख छि दपान नय छि वज़ानय,
गूपाल चें यिम वेथ छि दपान,
नय छि वहानय—नय छि वहानय

तसवीर आतशखान् मजाज़स छु दिवान डोल
मंज़ नार् ब्रेहन तूर् संगर
तोति दज़ान नय—नय छि वहानय

नय नगमु शीरींमन छु अमान, जुव छु जुवान कस
युथ नगमु प्रावुन मायंफतुक
श्रेह छे वरान नय—नय छि वहानय ।

تِیُتھ گیان[1] حاصِل یَدِ ، تھوکھ زانٔی اندر مَن   ۱ علم
سوٗے زان تاوِتھ اوم تہٕ کُنُے
ھُوٗ[2] چھُ پَران نے --- نَے چھُ بہانے   ۲ ایشور

زَن سوزِ وَنس زوٗنگ چھُ لگان ، لامُ لگن لام   جنگلس
مَن وِہنہٕ لگان تاوِہتِن
شولہٕ ژَرٹان نے ---- نَے چھُ بہانے

وَن سوزِ گُرھتھ روزِ ہُٹاہ ، ژوٗرِ بہتھ لوٗب
تُھکی پانہٕ تھلان وٲلہِ توٗے
آسہٕ گرٲن نے ---- نَے چھُ بہانے

فاضِل ! شریک ساز کُنُے ، سوز ھگر بیوٗن
گوپالہٕ ! لوٗبے لولہٕ ہتِن
منز چھُ سَران نے --- نَے چھُ بہانے

त्युथ ज्ञान हांसिल सपदि ववस जं्य अन्दर मन
सुय ज्ञान हांविथ श्रोइम तु कुनुय
'हू' छें परान नय—नय छे वहानय।

ज़न सोजवनस जोंन छु लगान लाम लूकन लाम
मन वुहनि लगान ताव हत्यन
शोलु छटान नय—नय छि वहानय।

वन सूर गंछित रोजि हंटा चूरि बिहिथ लेव
तेथ्य पानु थलान वालि तवय
मांस मरान नय—नय छि वहानय।

'फांज़िल'! शरीरुक साज़ कुनुय सोज़ मगर क्योंन
गोपालु! योहय लोलु हत्यन
मंज़ छें सज़ान नय—नय छें वहानय।

नोट— ग्यान—जानकारी, मकन
हू—ईश्वर, अल्लाह।



میٚہ چھا اِنکار، ماتا! اِکیازِ پیٚرز ھتھم

میٚہ یَے گوہی گاو ماتا ستی ہَر دَم

دوٚہچھ دوٚد ماسہٕ چوٗتھم ژوٗر ژورِ

ہَتے پوٚز بوز تَے مَلرے تہٕ ٹوٗرے

دوٚدِکی ژٔڈی چھیتھ تہٕ اَروٗزم کَل مِیہٕ اَتھکُن

یوٚہیَے گوٗٹھانہٕ ووٚتھ بھگوانہٕ سُنٛد دِیُن

نِچ تہٕ اَوتار چھینہٕ اَپُر سکان وُنِتھ۔ تِمَن ہُنٛزٕ ن کتھ۔ تہٕ کامہین مَنٛز چھُ شوٗزرٕ آسان۔

جنم پر جنم لے کے گیانی ضرور لیس ... جائے آخر کو میرے حضور ۷-۱۹

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते । वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।१९। कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥ यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥



पोंज़ अवतार

मैं छा इन्कार माता! क्याज़ि प्रुछ़थम
मे लय गोय गांव मातायि सूत्य ह़रदम ।

दोंपुथ दुद मा सां चोयम चूरि चूरे
हतय पोंज़ बोज़तय मलरे तु टूरे ।

दुदुवय नंटच बथ ति रूज़ुम कल म्य मय कुन
योहय गव ठानु वोथ भगवानु सुन्द ज़्युन ।

پنزر گو سریہ چھا پوشیدہ روزان

کرشن پوز ونہ چھا زنہہ کانسہ کھوژان؟

نہ پنزرِ چ نہ روزان وانسہ پابند

لوکُٹ بالک اَمی کورُت عقلمند



یہ دھرتی گاو ماتا پیٹھ چھ توشان

دوان دوہ د تھنی کرشن آخر بناوان

کھوان تھنی امریتکی نٹی داہہ چاوان

امس جگ ایشور پدوی چھ دیاوان



पज़र गव सिरियि छा पूशीद् रोज़ान
कृष्ण पोंज़ वनुनु छा ज़ांह कोंसि खोचान ?

नंहंज पज़रुच न रोजान वोंसि पावंद
लूकुट बालुक प्रेमी कोंरमुत अकलमंद ।

यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,
दिवान दुद, थंन्य, कृष्ण प्रांखुर बनावान ।

स्यवान थंन्य अमृतुक्य नंटच दामु च्रावान
प्रेमिस ज़ग ईश्वर पदवी छु द्यावान ।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥ अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

کرشن اکھ بالکا پزرک مجسّم

فخرِ زگتس یوہے اوتار۔ آدم

کرشن بتر آنز بیٹھ صلح علامتھ

یوہے اکھ پوشوِنی امنچ کرامتھ



کرشن گوٚیس چھ مورلی منز سۄ الہام

یمیک اکھ اکھ صدا لوکن چھ پیغام

کرشن گو ظلمہ الوانن سو گگراے

یمیک ڈسلابہ ایزس تالہ ترٚ کراے

کرشن گو مقصدک نزدیک منزل

امس نش سارنی حاصِل گنے دِل

۲۵۔ جو نیک لوگ مایا سے مستور ہوں یا جہاں کی نظر سے بہت دور ہوں۔

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्॥ वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन॥
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत। सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति



कृष्ण अख बालुका पज़ रुक मुजस्सम
फ़कुर ज़गतस यो़हय अवतार आदम।

कृष्ण वुतरांच़ प्यठ सुलहुच करामत,
यो़हय अख पोशिवन्य अमनुच अलामत।

कृष्ण गव यस छु मुरली मंज़ सु इलहाम,
यम्युक अख अख सदा लूकन छु पैगाम।

कृष्ण गव ज़ुलमु अयवानन सु वगराय
यम्युक दंसलाबु अपजि़स तालि तंच़ काय।

कृष्ण गव मकसदुक नज़दीक मंज़िल
अमिस निश सारिनुय हासिल कुनुय दिल।

25/1

کرشن گو دۄن سمت گرھنک سمندر
اوتھ وانتھ بنان پرتھ قطرٕ ساگر

کرشن گو یکدلی ہند اکھ سہ آگر
وزان ییتھ نِش چھ یدھ موتٲل تے سر

کرشن گیتایہ ہند گہتے منز آش
گٹٕ، تارکین منز سریہٕ پرکاش

کرشن گو اکھ پوتر روپ پریمک
تصور دِل پسند سوندر شریک

کرشن گو زلزلہ کرودس تہٕ کامس
سہ خالص سون کران کم مایہ ترامس

کرشن ہر دچ چھ پزٕ آئینہ داری
اہنکارس بناوان انکساری

कृष्ण गव दुन समुत गछ्नुक समन्दर
ओतथ वातिथ बनान ह्र कतर् सागर ।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अस्ल सु आगुर
वुज़ान यथ निश छु मदमोत ताल तय सुर ।।

कृष्ण गीतायि हुंद गाह तय मनुच आश
गटन तारीकियन मंज़ सिर्रियि प्रगाश ।

कृष्ण गव अस्ल पवितर रूप प्रेयमुक
तस्सव्वुर दिलरुबा सोंदर शरीरुक ।

कृष्ण गव जलजला क्रूधस त कामस
सु खोलिस सुन करान कम मायि आमस ।

कृष्ण हृदयिच छु पंज़ आईन दोरी
अहंकारस बनावान इन्कसारी ।

ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः । प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥

28/1

کرِشن گو تھنی دوہ دیچ مائے شُہل سرِ یہہ
موہس، لوبس کنی برِیہہ زالوِنی ریہہ

کرِشن گو پوشوُن گنگایہ ہُند جَل
چھلان ہینِدس، مُسلمانس دِلک مَل

کرِشن گو فکرِ تارُن وانسہ ہُند وُیُتر
سہ چھا اُگُسند؟ سہ گو پُرتھ کانسہ ہُند وُیُتر

کرِشن گو آتما سَت آتما بس
تمِس سوُرے چھ حاصِل دُے یہ گوُیس

ا۔ مائے = محبت ۲۔ برِیہہ = شولہ (شعلہ) ۳۔موہ = بھوُرے ہیونُے بھ۔ طمع ۔ ۵۔ وُیُتر = جاداد ۶۔ سَت = دائمی پزر ۷۔ دُے = مہربان

شری بھگوان کا ارشاد دسواں اَدھائے

ایہ سخن سنیخ بھگوان پھریوں ہوئے۔ کہ دُسن آئے قوی دست پیالے پتُرے

कृष्ण गव थंन्य दुदुच मालय शहुल सौंह
मुहस लूबस फुनी ब्रंह जालवन्य रेंह।

कृष्ण गव पोशवुन गंगायि हुन्द जल
छलान हेंदिस मुसलमानस दिलुक मल।

कृष्ण गव फिर्किर तारुन वांसिहुंद व्युच
सु छा अंक्यसुंद ? सु गव प्रथकांसि हुंद व्युच।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा बस
तमिस सोरुय छु हांसिल दययि गव यस।

مہاساگر کرشن یم دل بناوان
تمے تس منز گوناکی دُردانہ ژھاران
تلاشکی مرتہ گیانکی زیٹھ منزل
شعورس - لاشعورس تم بساوان

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।
तिमय तस मंज़ ग्वनक्य दुरदानु छारान ॥
: तलाशिय मर तु ज्ञानक्य ज़ीठ्य मंज़िल।
शऊरक्य ला शऊरक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले,

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।
यन्मेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः

मजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥



نَے ہٕ مورلی

ہے ! نَے چھ گرٕزھان ہشولہٕ وہان، نار ہیُسہ نار
رٔبہ زیُنو مُنِن کرٕشنہٕ زٔبہ کوٗن
لار ہیُسہٕ لار

لاہو تہٕ پیلچھ زٔ چھ کرٕان کُنہٕ کیٚنگس طوٗر
آکاشہٕ پھٹک سریہٕ زٔبہ نش
جار ہیُسہ جار

دِل پانہٕ برٕہمان۔ کیاہ چھ دُیٗ۔ کیتھ چھ دُتان بیر
یِم چانہٕ ٹھِج پُکی تہٕ سیدی
یار ہیُسہ یار

حقیقت شناس قلب عقل خرد اس ہا ہر دلیری دکھ سمیھ ہے سے مجھیا کتہ

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः । सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥४॥ अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः । भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥५॥ महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥



नय छें गछान

हे नय छें गछान. शोलु वुहान, नार हसा नार !
रेंह चेनवन्यन कृष्ण चेंकुन
लार हसा लार !

लाहूत प्यठ'च जुच छें करान कुनिरु' कँगस तूर,
आकाशि प्यठुक सिरियि च्रे निश
जार हसा जार !

नोटः-
१ लाहूत–तस्सवुफक थोद मुकाम २ कोहि तूर ।

दिल पानुब्रमान क्या छें दुई कथ छि वनान वैर
यिम चानि नेहंज पेक्य त सपुद्य
यार हसा यार !

گوپالہٕ ! یَژھاکھ آرِ پلَس آب کرکھ آب
اَکھ ژٔرہ تہٕ دوٚہ دَس ہوٚکھرِ لگان
دارِ ہِسٕہ دارِ

یِم چانہٕ کلے پھُٹی تہٕ چینیکھ وٚتھ تہٕ ہپدی وٚتھ[2]
تِم قُلزِ مَن تٔری تارِ ہوٚنشکھ
تارِ ہِسٕہ تارِ

دھن نارِ نوٚلہ : کیٚنہہ مگرِ مَن چھُ گنجک نیاس
یَس نارِ زٔنہ پیٚتھ تَس نہٕ گنج
نارِ ہِسٕہ نارِ

نارِ تھ تہٕ زَرِ لونُم، کرِشنہٕ لوٚبُم۔ مَن مبہ سَرفراز[3]
اَتھ پرِکمہ تیلیچ بیٹھ مبہ گُندم[4]
زارِ ہِسٕہ زار

۲ دریاو
۴ برس

गूपाल् यछ़ख आर् पलस आब-करख आब
अख चूह त् दोदस होंखरि लगान
दार हसा दार !

यिम चानिकले फंट्य त् चेंयख व्यथ त् सप्द्य व्यथ,
तिम कुलज़ुमन तेर्य तार् मोंशुख
तार हसा तार !

धन हार् नोंला, कें ह न् मगर मन छु गंजुक न्यास,
युस हारि च्रें पथ, तस न् कुनिंच ।
हार हसा हार।

हांरिथ ति ज़्यूनुम कृष्ण लबुम मन में सरफ़राज़
पथ प्रेम् पेंज, व्यठ में र्यंदुम
ज़ार हसा ज़ार।

नोट — १ सरफराज़—प्रसन्न, खोश ।

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः॥७॥ अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥

پچھ وانٔسہ بگرِ ھتھ کرِشنہ ژٕ ما یکھ تہٕ مہکھ دِل
اَتھ زٕ نمہ پھرس ژٕ ہیہ چُھ لگان
پیار ہیسہٕ پیار

ژٕ ہیہ = سات

کملاوُ ہینہ وُٹھ تہٕ گہے پھرتہٕ مہہ کُن نیٖن ! نیٖن = اَچھ
یوٗد تیر نظر دِکھ تہٕ دَپے
مار ہیسہٕ مار

کرِشنا ! مہہ دِتھِم سوز نتَے نے مہہ دِلس زٕ دی
چھس دوٚ ہین ہیٚن پٹھ پیٚتھ ونک ہوٗکھ
دار ہیسہٕ دار

دار = دِو دار

موٗرلی چھ ندا ۔ ہاتفنی لے ۔ شہٕ چھُ اُمیک زٕ وٗ
رُح بالہِ کرِشن ہا فاضلنی سیم
شالہ ہیسہٕ شار !

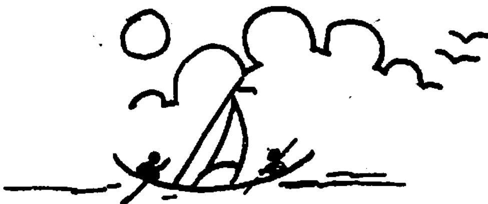
۱ فرشتہ

लछ वांस् गछिथ कृष्ण च् मा यिख त् मुहकमन
अथ जन्म् फिरिस च्युहं छु लगान
प्यार हसो प्यार।

कुमलाव हना वुठ त् गहे फिर त् मेंकुन नैन
योंद तीरि नज़र दिख त् दपय
मार हसो मार।

कृष्णा में द्य तथम सोज़ नतय नय म्य दिलस ज़'द्य
छस दोन शहन प्यठ पथ वनुक
होंख दार हसो दार ।

मोरली छु निदा, हातफ्न्य लय, शह छु अम्युक ज़ुव
रुह बाल् कृष्ण फांजिल्न्य यिम
शार हसो शार ।



ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥ तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।

موٗرلی تہٕ موٗرلِ دٲر

کرشنہٕ موٗرلی پیکرِ سوز و گداز
دِلربا، دِلکش، ہوٗدر تہٕ دِلنواز
یَے اَچھ عرفاں تہٕ شاہ قدسی صِفات
پانہٕ موٗرلی دار چھُ سرتاپا اعجاز

میٚژونے

میٚژونے پٔرانہٕ سٲنِس بانسُری زان
یہانہٕ! گوڑھ وچھُن نے کس چھُ وٲیان
شریک سوز لافانی شخص تام
شُہک ہا اَکھ کرشن اوتار انسان

मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैकरे सोज़ो गुदाज़,
दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज़।
लय अमिच इरफ़ान त् शह कुदसी सिफ़ात
पान् मोरलीदर छु सर ता पा मजाज़ ॥

नोट :-

१ पैकर—कालब, जिसम=मुज्जसम
२ कुदसीसिफात—रूहानी गोण थवन वोल
३ मोरलीदर—मरली वोल, कृष्ण जी।

मेंच़िव नय

मेंच़िव नय प्रानि वकतुच बाँसुरी ज़ान
बहानय, गोंछ़ वुछुन, नय कुस छु वायान
शरीरुक सोज़ लाफ़ानी शहस ताम
शुहुक मोलिक कृष्ण अवतार इन्सान ॥

नोटः-

१. नय—मोरली

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम । भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥



کرشن بانسُری ہیتھ بٕرتھ سیٚحر زَن اَتھ
یہ مستی تہٕ فرہیتھ چھ زَن لوزوٕنی چیتھ
یہ سنگیت چیتھ آئے کرشنا
یہ مورلی ہوٚدِ رائے کرشنا
تٕ زگتس یہ نے وائے
کرشنا کرشنا!

۱۶۔ کرین آب چھ پر مکمل عیاں جلال مقدس گا واضح نشان

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः । याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि । कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् । केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥ विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन । भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥

ژٔ شوقہ سانؑ رُمَس رُمَس اگر کرشن گرکھ
مرکھ ژٔ مرنہ برٛونٛہہ- تۄے نسۂ ژٔ زٔنہہ مرکھ
چھ ژٔ نمہ پھری لگاں تمن ہُشد گرتھاں یمن
ترکھ ژٔ بوسرس اگر کرشن کرشن کرکھ

च़ शौकु सान रुमस रुमस अगर कृष्ण गरख
मरख च़ मरन ब्रोंह-तवय नसा च़ ज़ांह मरख
छि जनमु फिरय लगान तिमन मॊशिद गछान यियन
तरख च़ भवसरस अगर कृष्ण कृष्ण करख।

कृष्ण बान्सुरी हाथ बॊरिथ सेहर ज़न अथ
यि मस्ती त फ़रहथ छि ज़न बोज़वुन्य चथ

यि संगीत चथ आय कृष्णा !
यि मोरली मोदुर माय कृष्णा !

च़ ज़गतस यि नय वाय, कृष्णा कृष्णा !

یہ لے زَن مَنس نالہ   دَزان زَن زَندَن دار
کرَان رُح چھ بیدار   یہ یَس لوٗگ سُہ ہُشیار
تَمِس کینہہ نہ پَرواے کرِشنا!
یہ موٗرلی گرِشِم کرِلے کرِشنا!
مَنس کینہہ نہ پَرولے
کرِشنا کرِشنا

—.—

یہ لے لوٗزنگ ہیس   دِوان الیشور یَس
سُہ یوگس اَندر مَس   کرَان شَشَبہا تَس
تَمِس نِش پِدَر دِرلے کرِشنا!
یہ موٗرلی چھ بُدِ شاے کرِشنا!
ہیسِچ وَتھ چھ سِیُز تراے
کرِشنا کرِشنا

—.—

۱۹۔ ہوتئے سن کے بھگوان یوں لب کُشا ہیں ارجن مرتبے وصف لا انتہا۔

यि लय ज़न मनस नार दज़ान ज़न चंदन दार
करान दिल छु बेदार यि यस लोंग सु हुशियार

तंमिस कैंह नु परवाय कृष्णा !
यि मोरली ग्रेशम क्राय कृष्णा !

मनस कैंह नु परवाय, कृष्णा कृष्णा !

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस
तंमिस निश रुचर द्राय कृष्णा !

यि मोरली छे बंड शाय कृष्णा !
ह्यसच वथ छे स्यज़ त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

یہ لے پھیر گوشَن تہٕ لٔج لام پوشن
چھ بُلبُل تہٕ توشَن حُقیقت چھَ روشَن
یہ ہورلی چھ بے زھائے کرِشنا!
یہِ ہورلی چھ یکتائے کرِشنا!
یہ بے رنگ بے زھائے
کرِشنا کرِشنا

دَھرم ہا کرُے تہٕ انسان سیٹھاہ ژِ سیٹھاہ جان
یہ ساہری چھ ہانان چھُ منزل سُہ بھگوان
چھَ گیتا تہٕ ہمرائے کرِشنا!
یہ ہورلی اَژ بہ پوژ آے کرِشنا!
سمے سور ہمرائے
کرِشنا کرِشنا

۲۲- سمجھ مجھ کو ویدوں میں تو وید سام ہمر دیوتاؤں میں واسو ہے نام-

यि लय फ़ीर गोशन तु लंज लाम पोशन
छि बुलबुल ति तोशन हक़ीकत छे रोशन
यि मोरली छे त्रे छाय कृष्णा।
यि मोरलो छे यकताय कृष्णा।
यि बे रंग बे छाय कृष्णा !

नोट : १ गोशन-तरफातन २ यकताय - समुन
करन वाजन ३ बेरंग—बे इम्तियाज



धर्म, कर्य त इन्सान स्यठा ह्यय, स्यठा जान
यि सोरी छि मानान छु मंज़िल सु भगवान
छे गीता ति हमराय कृष्णा।
यि मोरली चे पोंज़ भाय कृष्णा!
समय सोर हमराय कृष्णा कृष्णा!

نَئے ئے چھ یکسان کُنی ہیندو مُسلمان
چُھ رحمان بھگوان چھ بھگوان رحمان
دُپئی ہنز نہ کنہہ راے کرشنا!
یہ موُرلی چھ بے نیاے کرشنا!
چُھ یکسان بے نیاے
کرشنا کرشنا

حِفاظت پَتھ ہنز چھ وَتھ مُرسلن ؑ ہنز
گہے موسیٰؑ ہنز گہے عیسیٰؑ ہنز
گُپالاٗ ژ نہ تھر بعاے کرشنا!
یہ موُرلی دِیچ جاے کرشنا!
ژ نہ نِش یم سُمنتھ آے
کرشنا کرشنا

गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥

नये लय छें यकसान कुनी हेंन्द्य मुसलमान
छु रहमान भगवान, छु भगवान रहमान।
दुई हुंज् नॅ कांह राय क्रूष्णा !
यि मुॅरली छे बे न्याय क्रूष्णा।
छु यकसान बे न्याय क्रूष्णा क्रूष्णा।

नोटः- १ दुई - वैर २ बेन्याय - न्याय रोस



हिफ़ाज़त पशन हुंज् छे वथ मोरसलन हुंज्
गहे मूसुहन हुंज़ गॅहे ईसुहन हुंज्
गुपाला चें थंज् जाय क्रूष्णा !
चें निश संमिथ यिम आय, क्रूष्णा क्रूष्णा।

—:०:—

नोट :- पुश —हयवान, २ मारसल—दरजस मंज
पॅगमबरस खसिथ

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् । ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।

ژِھچھاکھ تھنٔی یا ژِھچھاکھ پھنٔی ژِھچھاکھ ما نچھ ہیو یا تھنٔی
یہِ تھنٔی سوٚر گٔیہ کمٔی اُنٔی نقش اَتھ چھہ بَنٔی بَنٔی
چھہ رِکیوپاڈ تہِ سِر سائے کرٚشنا!
یہِ موٚرلی چھہ سِراے کرٚشنا!
ھیٚنَن ژِ دٔبرائے
کرٚشنا کرٚشنا

کرٚشن جیا ژٕ بہ چھُہ جے گُنے شَہ، گُنے پَے
کُنی نَے، کُنی یَے یتھی وہ یَشِرھان دَے
یِمے گوٚن ژٕ بہ نش دٕرائے کرٚشنا
یہِ موٚرلی! ژٕ بہ نش زائے کرٚشنا
ژٕ بہ جَے جَے! ژٕ بہ لوگ آے
کرٚشنا کرٚشنا

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ।
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ।३५।
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ।



च़ छुख थ़ंन्य, च़ छुख थ़ंन्य, च़ छुख मांछ ह्यु व थ़ंन्य
यि थ़ंन्य मुरग कम्य अ़न्य, नकुश अथ छि बंन्य बंन्य,
छु क्यूपिड़ ति सिरसाय कृष्णा !
यि मुरली छि ससराय कृष्णा !
हसोनन च़ दुबराय, कृष्णा कृष्णा !

कृष्ण जी च़ें छुय जय, कुनुय शह कुनुय पय,
कुनी नय, कुनी लय, यिथी विहुच यछ़ान दय,
यिमव गुन च़ें निश द्राय कृष्णा !
यि मुरली ! चै़ थ़ंज जाय कृष्णा !
च़ें जय जय, च़े लुंग प्राय कृष्णा कृष्णा !



گُلن ہُند ترنُّم شُہرین ہُند تکلُّم

چھ مُرلی موٗد مِیوٗٹھ گفتار گُفتار

وُزُن شبنمُک، جلترنگ تارکن ہُند

یہ مُرلی سراپا چھ سیتار سیتار

دلچ پوشوٗنی لے ہنج زندہ آواز

یمن منز چھ پوٗشیدہ اسرار اسرار



मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥

गुलन हुंद तरंनुम थरचन हुंद तबकलुम,
छे मुरली मुदुर म्यूठ गुफ़्तार गुफ़्तार।

वजुन शबनमुक, जलतरंग तारुकन हुंद,
यि मुरली सरापा छे सेतार सेतार ।

दिलुच पोशु वन्य लय मनुच जिन्द् आवाज़
यिमन मंज़ छि पूशीदु असरार असरार ।

यच, दुद, तु गुरुस क्याज़ि चि अंदेश करिथ चोथ,
भगवानु ! यहुंद बागि बेरुत शेहजार लुकन वोत।
ज़ुव मंगत, जिगर मंगतु, च रुह मंगतु दिलो जान,
मौसूमु ! लगय क्याज़ि असों चूरि मक्खन रयोथ॥

मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः ।



بالہٕ کرشنن یامہٕ دژنم آگہی
گو یادِ ہر دسس ہیہ ذوقِ بندگی

بانسری ہُند شہ چھُ پرٕیمک آتما
بانسری ہنز نے چھ سازِ دِلبری

بوزِ و نے دوّپ نے خودی ہُند رُوپ رنگ
اتھ خودی پیٹھ چھے فدا چھ بے خودی

وِچھ امی مورلی حقیقژ واش کوڈ
کوڈ امی ظاہر زہ اوتار گو نبی

یکدِلی منز کر و بیان سُرخ و سفید
فاضلا! مورلی پنُن رنگ قودرتی

बाँसुरी

बालकृष्णन याम दिच़नम आगंही[1]
पांद्‌' गव हृदयस[2] म्य जौके[3] बंद़गी ।

बांसुरी हुंद शह छु प्रेमुक आत्मा
बाँसुरी हुंज़ लय छैं साज़े दिलबंरी ।

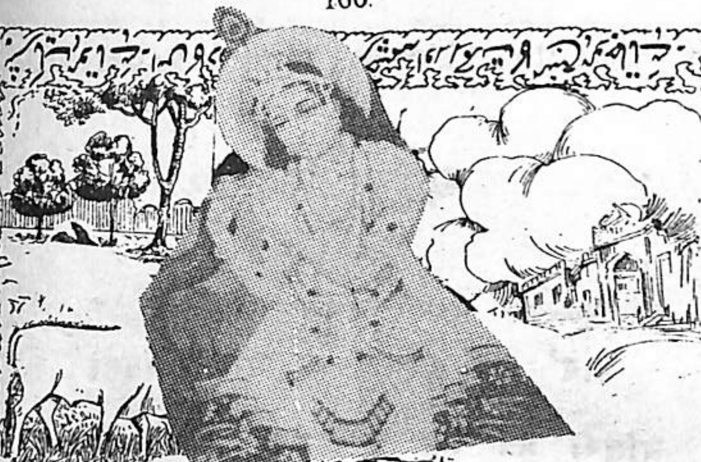
बोज़्‌वुन्य दो'प नय "खोंदी" हुँद रूप रंग
अथ खोंदी प्यठ छय फ़िदा लछ़ "बेखोंदी"

वुछ़ अमी मोरली हक़ीक़च़ वाश कोंड
कोंर अमी ज़ांहिर ज़्रि अवतार गव नंबी,

यकदिली[4] मंज़ कर व्यपान सुरखो सफ़ेद
"फ़ाज़िला" मोरली पनुन रंग कुदरती

नोट : 1. जाग्रती, ह्यस 2. दिलस, 3. शोक
4. ह्रिशर

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप । एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा । तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन । विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥



بے خبر پأٹھی کرشنہٕ لالن گورنس

مرتبس منز ہیر ہوٚر ہیوٚر کھورنس — صدرجہ

اتھ اندر میانین اتھن منز اوس کیاہ

واو حالین منز بہٕ سوٚدرس تورنس — صاگرس

Unconscious mind — Conscious mind

شعورس لاشعورس منز کرشن آم

ژھچھم زن سِریہٕ، لیکن رنگ سیاہ فام

سُہ باہتھ دارشنگی برٕوتھی چھُہ تراوان

وُچھان تس گوپین ستی الیشورٕ تام

گیانی کو جب عرفان باری حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لئے ہر طرف ایک ہی پرماتما کا

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥२॥
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर ।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥३॥

वेख़बर पा'ठ्य कृष्णु' लालन गोरनस,
मरतबस मंज़ हेरि ह्यो'र 'ह्यो'र खोरनस।
अथ अन्दर म्यान्यन अथन मंज़ प्रोस क्याह,
वावृ हाल्यन मंज़ ब' सो'दरस तोरनस।

शऊरस लाशऊरस मंज़ कृष्ण आम,
वुछुम जन सिरियि लेकिन रंगु सियाह फाम।
सु यामथ दर्शनुक्य बर वंथ्य छु त्रावान,
वुछान तस गूपियन सू्त्य ईश्वर ताम।



دِلَن گو دِیِ وِ دَھرمُک آبرو کمَ
چُھ اَوگون پھانپھلاوان اِبنِ آدَم
ژٕہپکھ اَوتار سَت یوگ پھیرِ والیس
اَوَے کینٕہ پِیارِنٕچ کَل آشہٕ ہُژ چھَم

۱۔ اَوگون = بَدصِفت ۲۔ اِبنِ آدم = اِنسان ۳۔ اَوتارٕ ہیوٚن = پیٚیہِ زٕلوٚن۔

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

صحیح وَتھ رَٹھ! کرشن چھے سیتی پانس
سُمیلِتھ سنز رکیس ذرس ذراتس
جہانس سور ستھ یام تار لبنچ
نجاتچ رز کرِتھ لاگیس کِنارس

संही वथ रठ ! कृष्ण छुय सुत्य पानस
सुमीलिथ पज़रकिस जरस ज़ुरातस।
जहांनस सोरि सथ याम तार लबनुच,
नजातचि रज़ करिथ लाग्यस किनारस।

दिलन गव दीनु धर्मुक आबिरू कम,
छु अवगोन फांफुलावान इंसि आदम।
चु ह्यथ अवतार सतयोग फेरि वापस,
अवय किन्य प्रारुनुच कल आशिहचुछम ॥

अवगोण—बदसिफत,:— काम, क्रोध, लोभ. मोह. अहंकार
याने शहवथ, चख. मालय, तमाह त गुरूर



یاہتھ یہ آدم دین و دھرمک پراٹھ یہ سمسار
گیتا چھ شاہد کرشنہ گوپال سپد نمودار
تس سپد بے دینن ادھرمن تے پچھن ستی جنگ
میژ خاک سپدن چھیکرس ظالم تہ خطا کار

۲۸۔ ہوا دل کو ارجن کے رنج و ملال، کہا رحم و رقت سے ہو کر نڈھال۔

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ।

گیتا

کرشن جی ارجنس اسرار باوان
تمن ہند آنہ گیتا گاشراوان
سلوک نابد تہ الہامی شبد قند
پرن والس چھ امرت دامہ چاوان

कृष्ण जी अर्जुनस असरार बावान,
तिमन हुंद आनु गीता गाशरावान ।
श्लोक नाबद तु इलहामी शब्द कंद,
परनवालिस छि अमृत दामु चावान ॥



यामत यि आदम धर्मुकदीनुक प्राटि यि संसार,
गीता छि शाहिद, कृष्ण गूपाल सपदि नमूदार ।
तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,
मेंच़ ख़ाक सपदन छेकरस बेदीन तु ख़ताकार ।

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥

न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥



یام دھرتی پیٹھ سَنُد مُدی یاینہ عام
ژکرسندی پاٹھی نتر نہ لگی کورو تمام
سَت نمودار گو اسَت کو فنا گو
کور سری کرشن صحی سمیک نظام

ہماری ادھر فوج ہے بے شمار کماں دار بھیشم سا عالی وقار



याम दरती प्यठ सपुद मुदियानु प्राम,
च़कि हिद्य पांठ्य नच़नि लग्य कोरव तमाम।
सत नमूदार गव असथ काफूर गव,
कोंर श्रीकृष्णन सेंही समयुक निज़ाम ॥



چھُ بھگوَن ناسہِ تراسَن بیخ گالان ۔ دَغابازَن چھُ موتک پیالہٕ چاوان
گَٹن مَنز پھالُوان جیوَن اَدھرمَن
سُہ دِین دار: حَق پرَستَن تارٕ تاران

छु भगवान नासुत्रासन बेख़ गालान ।
दग़ाबाज़न छु मोतुक प्यालु चावान ॥
घटन मन्ज़ फाटुवान ज़ीवन अध्रमन ।
सु दीन्दार: हक़ परसतन तारु तारान ॥



ستمگارو ستم کوٚر پانٛی پانس
مہابھارت پھِرُن رُوٗد پرتھ زمانس
تُلوِ پزرچ علم پوٚز روز قایم
سبق دیت کرشنہ اوتارن جہانس

सितम गारव सितम कौर पान्य पनस।
महाभारत फ़िरुन रूद प्रथ ज़मानस ॥
तुलिव पज़रुच्य अलम, पो'ज़ रोज़ि क़ाइम
सबख द्युत कृष्णु अवतारन जहानस ॥

کرشن کہانی

اگرسین اور دیوک دو بھائی تھے۔ اگرسین متھرا کے راجہ تھے۔ دیوکی ایک کنیا تھی۔ اس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناطے دیوکی کو بے حد پیار کرتا تھا۔ دیوکی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شورسین کے بیٹے واسدیو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوکی کی شادی سے بے حد خوشی ہوئی۔ اس نے دیوکی کو جہیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اس کا آٹھواں بیٹا تمہارا قاتل ہوگا۔ جب کنس نے ایسا سنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سنا۔ اچانک پھر یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غصہ آیا اور قصد کیا کہ دیوکی کے بطن میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جنم لینے سے پہلے ہی اس کی ماں دیوکی کو موت کے گھاٹ اتاروں اس کا بیٹا اس کے بطن میں مر جائے۔ وقت آنے پر کنس نے دیوکی کے بال پکڑ کر اس کو مارنے کے لئے تلوار

پہلا ادھیائے۔ دھرت راشٹر نے کہا:-

कृष्ण कहानी

लेखक

मानस-किंकर कौशलकिशोर दास

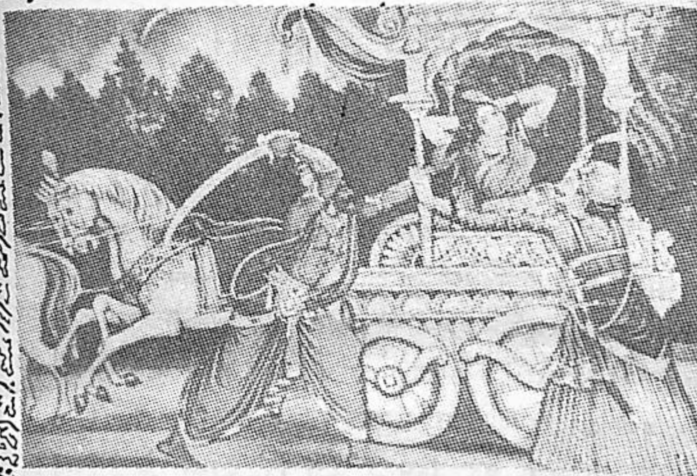
उग्रसेन और देवक दो भाई थे। उग्रसेन मथुरा के राजा थे। उनका पुत्र कंस था। देवकी देवक की कन्या थी। छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था। देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया। कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया। जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा। जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा। तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवाँ पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूँ जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहाँ से होगा। ऐसा सोच कर

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥१॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥२॥ पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥



کرشن مہاراج کی ماتا جی کو
بھائی کنس قتل کرنے لگا۔

تاکہ اُس کا بیٹا اُس کے بطن میں ہی مَر جائے ۔ وقت آنے پر کنس نے دیوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار میاں سے نکالی۔ جیسے ہی وہ (واسدیو جی) اُسے مارنے لگا تو کنس نے اُس کا ہاتھ پکڑا اور پرارتھنا کی کہ دیوکی عورت ہے ۔صنف نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور شادی شُدہ ہے ۔ اِس لئے آپ اِس کو نہ ماریں ۔ اِس کے جو بیٹے ہوں گے ہم اُنہیں آپ کے حوالے کریں گے ۔

لڑائی کو نکلے ہیں اہل خدنگ جو سپہ ارجن اور بھیم ہیں وقت جنگ

कंस ने देवकी के केश पकड़ कर उसको मारने के लिए तलवार म्यान से निकाली। जैसे ही मारने को तैयार हुआ, वसुदेव ने कंस का हाथ पकड़ कर कंस से प्रार्थना की कि यह स्त्री है, अबला है, आपकी बहिन है, फिर नवविवाहिता है अतः आप इसको न मारें। इसके जो पुत्र होंगे उन्हें हम आपको सौंप देंगे। जब देवकी के



कंस बड़ा पापी था। उसकी दुष्टताकी सीमा नहीं थी। वह भोजवंशका कलङ्क ही था। आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥
धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

کرشن جی نے جنم لیا۔ بھگوان نے اُن سے نند جی کے گھر گوکل پہنچانے کے لئے کہا۔ وہاں اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسدیو کے ہاتھوں سے ہتھکڑیاں کھل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھل گئے اور سب پہرہ داروں پر گہری نیند غالب آ گئی۔ واسدیو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



को नींद आगई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्राथंना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहां पहुंचा दो और वहां उनके यहां कन्या उत्पन्न हुई है उसको यहां ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियां खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन फैलाकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया



को नींद आगई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप

واسدیو جی نے کرشن جی مہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پورے احتیاط
کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پر پہنچ گیا۔
اسی دوران میں موسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی
پانی چڑھ گیا تھا اور دریا کو عبور کرنا ناممکن تھا۔ اتفاق سے
عین موقع پر شیش ناگ نمودار ہوا اور اپنا پھن پھیلا کر بھگوان
کے اوپر چھتر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ
لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا
کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقعہ فراہم کیا۔ جمنا جی نے اُن کے پیر
چوم لیئے اور پرسن ہو گئے۔ تو فوراً واسدیو جی کو پار جانے دیا۔
واسدیو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گئے۔ وہاں اُس
وقت نند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسدیو جی نے کافی
راز داری کے ساتھ کرشن جی کو ماتا جسودا جی کے پاس لٹا دیا اور
کنیا کو اُٹھا لیا اور متھرا آ کر دیوکی جی کو دے دی جیل خانے میں پہلے
ہی کی طرح تالے پڑ گئے۔ لڑکی کا رونا سنکر تمام پہرے دار جاگ اُٹھے۔ خبر
پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچے کو دیکھ کر معلوم ہوا کہ یہ لڑکی ہے۔

یہ مقدس گرو صاحب احترام جہاں کے دو جنموں میں عالی مقام



तब भगवान ने उनका भाव समझकर सूप से अपना पैर निकाल कर स्पर्श कराया। यमुना जी चरण स्पर्श कर प्रसन्न हो गई और उन्हें मार्ग देदिया। वसुदेव जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे थे। अवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के पास कृष्ण जी को लिटा दिया। कन्या को उठा लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया। कारागार में पहले की भाँति ताले पड़ गये। कन्या का रुदन सुनकर सब पहरेदार जाग गये। खबर पाते ही कंस वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते॥७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च॥८॥
...मदर्थे त्यक्तजीविताः।

مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی مایا کا وچار آتے ہی جونہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اٹھایا وہ ہاتھوں میں سے نکل کر فضا میں اڑ گئی اور بولی" ارے راجہ کنس! تو مجھے کیونکر مارتا تجھے مارنے والا تو گوکل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے بائیں ہاتھ کا کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کریں گے۔ تب کنس نے بہت سے راکھشوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوکل بھیجا، لیکن وہ خود ہی موت کا شکار ہو گئے۔ جو بھی جاتا تھا اس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس نے پوتنا کو بلایا۔ اس نے کہا کہ گوکل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں ان سب کو کھا جاؤں گی۔ یہ سن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پوتنا اپنے پستانوں میں زہر بھر کر گوکل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر نند بھون میں آگئی اور ایک بہت سندر گوپی کا روپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا۔ جسودا جی گھر میں دوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پوتنا نے زہر بھرے پستان کو بھگوان کے منہ میں ڈالا۔ تب پربھو نے دودھ کے ساتھ اس کے

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली अरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है। कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएं हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर अभी काम तमाम कर देते हैं। तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का ग्रास बन गए। जो भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया। उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मैं सब को खाजाऊंगी। इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ। पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई। वहां सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं लाला की बधाई लेकर आई हूं तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया। यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुंह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी

पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्॥१०॥ अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्।



پرانوں کو بھی پی لیا
اس طرح شکٹا سُر
بکاسُر اور نرکاسُر
وغیرہ بے شمار
راکھشسوں کا
خاتمہ کر دیا۔
بھگوان کرشن
پہلے ہی کنس
کو بھی مار سکتے
تھے، لیکن اِن
راکھشسوں کو بھی

بھگوان کرشن پُوتنا کے پران چوس رہے ہیں

مارنا تھا، اس لئے کہ کنس اُنہیں وہاں بھیجتا تھا اور پربھو جی اُنہیں آسانی اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ماکھن لیلا میں بھی سیاست کارفرما تھی، کیونکہ برج کے علاقہ سے سب ماکھن غارتیا بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے

جنگ کی شورش



लिया। इस प्रकार शकटासुर, बकासुर, नरकासुर इत्यादि अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान कंस को भी पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी मारना था अतः कंस उन्हें वहाँ भेजता और प्रभु खेल २ में उन्हें मार देते थे। भगवान की माखन लीला में राज-नीति थी क्योंकि ब्रज से सब माखन ऋण रूप में कंस को भेजा जाता था। भगवान ने

سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی تھی۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہیے۔ نیز گوپیوں کا ان پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی ان کے گھر نہیں جاتے تھے وہ رو رو کر انہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی مٹکی توڑ دی۔ جسودا جی نے اسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو ٹیڑھا کر دیا۔ یمل ارجن کا ادھار (خلاصی) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب نارد جی نے آکر کہا کہ آپ بھگوان کرشن اور ان کے بڑے بھائی کو دھنش یگیہ کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے پھول لانے کو کہو۔ کنس نے اکرور کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سارے گوکل کو جمنا میں بہا دینگے اکرور جی نے سب ماجرا نند جی کو سنایا۔ ماتا جسودا نے کرشن سے کہا کہ آج دور کھیلنے مت جانا، لیکن پربھو نے سب دوستوں کو ساتھ لیکر جمنا کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی تو انہوں نے اسے جمنا میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اس میں کود پڑے۔ وہاں کالیا ناگ کو قابو میں لاکر اس کے پھن پر ناچنے لگے اور اسی پر

۱۲۶- یہی ہیت یدھشٹر وہ کنتی کا لال وجے پر دکھاتا تھا اپنا کمال

बल मिलता है वहाँ नहीं जाना चाहिए। दूसरे गोपियों का उन पर बहुत स्नेह था। जिस दिन कृष्ण जी उन के घर नहीं जाते तो उस दिन वे रो-रो कर पुकारती थी और आने पर माखन खिलाती। भगवान प्रत्येक कार्य लीला द्वारा करते थे। एक बार घर में माखन की मटकी फोड़ दी। यशोदा जी ने ऊखल से बाँध दिया भगवान ने ऊखल को तिरछा करके यमुलार्जुन का उद्धार किया। जब कंस को बहुत दिन हो गये तब नारद जी ने आकर कहा कि आप दोनों बालकों को धनुष यज्ञ के बहाने बुलाओ और तीन करोड़ कमल के पुष्प लाने को कहो। कंस ने अक्रूर को दोनों बालकों को लेने के लिए भेजा और आज्ञा दी कि यदि इतने पुष्प नहीं भिजवाये तो सारे गांकुल को यमुना जी में बहा देंगे। अक्रूर जी ने सब समाचार नन्द जी को सुनाया। माता यशोदा ने कृष्ण से कहा आज दूर खेलने मत जाना। लेकिन प्रभु ने सब सखाओं को साथ लेकर यमुना किनारे गेंद का खेल शुरु कर दिया। जब भगवान के पास गेंद आई तो उन्होंने यमुना में फेंक दी और फिर स्वयं भी उसमें कूद पड़ी। वहाँ कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया



تین کروڑ کنول کے پھول منگالیئے۔ اکرور جی جب بلرام اور کرشن کو لے جانے لگے تو تمام برج اُن کی جدائی میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان نے اُن کو سمجھایا کہ ہم جلدی لوٹ آئیں گے۔

متھرا پہنچکر کولیاپیڑ نامی ہاتھی کو نجات دلائی۔ کشتی کھیلنے کے دوران بے شمار پہلوانوں کو پچھاڑا۔ اپنی ماتا دیوکی جی کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو بالوں سے کھینچ کر، پکڑ کر اور مار کر اُسے مکتی بخشی۔ واسدیو اور دیوکی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اُگرسین کو قید سے نکال کر تخت شاہی پر بٹھایا۔ جراسندھ اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے اُن تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب ۱۸ اٹھرہویں بار اس نے حملہ کیا تو بھگوان دوارکا چلے گئے اور رات بھر میں تمام لوگوں کو دوارکا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر

प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥

वहां कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया और उसी पर तीन करोड़ कमल के पुष्प मंगवाये। अक्रूर जी बलराम, कृष्ण को ले जाने लगे, तो समस्त ब्रज विरह में रो रहा था तब भगवान ने उनको समझाया कि हम जल्दी आयेंगे। मथुरा पहुंच कुवलयापीड़ हाथी का उद्धार किया। मल्ल युद्ध में अनेक मल्लों को धराशायी किया। अपनी माता देवकी का बदला लेने के लिए ऊपर बैठे कंस को केश पकड़ कर मार कर उसका उद्धार किया। वसुदेव और देवकी को मुक्त किया। कंस के पिता राजा उग्रसेन को कारागार से निकाल कर उन्हें राज सिंहासन पर बिठाया। जरासन्ध अपने दामाद का बदला लेने के लिए सत्रह बार सेना लेकर आया। भगवान ने सबका ही संहार किया। जब अठारहवीं बार उसने युद्ध किया तो भगवान द्वारिका चले गए और रात भर में सब लोगों को द्वारिका पहुंचा दिया और स्वयं एक पहाड़ी के पीछे से निकल कर कूद पड़े। जरासन्ध ने सोचा इतने

नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥ अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ।

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत ।

संजय उवाच ... महीपते । ... सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥

کود پڑے۔ جراسندھ نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں ہونگے تاہم پہاڑوں کے اِرد گِرد آگ لگوادی۔ پھر خوش دلی سے بسر اوقات کرنے لگے۔

اِدھر بھوماسُر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کرکے انہیں حراست میں رکھا ہوا تھا۔ اُنہوں نے بھگوان سے التجا کی، اس پر بھگوان نے بھوماسُر کو قتل کرکے مُکتی دلائی۔ پھر اُن کے پرارتھنا کرنے پر پتنی روپ میں تسلیم کیا۔

کوروؤں پانڈؤں کی آپس میں دُشمنی تھی۔ پانڈو بھگوان کرشن کے مُعتقد تھے۔ کوروؤں نے جوئے کی چال چل کر پانڈوؤں کو ہرا دیا، اور سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھری سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔ لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دُشاسن کھینچتے کھینچتے ہار گیا۔ ان کو جنگل بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی، کبھی زہر دیا۔ لیکن پربھو سب طرح سے اُن کی حفاظت کرتے رہے۔ مہابھارت کے جنگ میں ارجن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارجن کو موہ آیا تو اُسے گیتا کا اُپدیش دیا۔ جراسن کو بھیم کے ہاتھوں مروا دیا۔ آخر

ऊँचे से बचे नहीं होंगे और फिर पहाड़ी के चारों ओर आग लगवा दी, फिर प्रसन्न मन से रहने लगा। उधर भौमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भौमासुर का वध करके उन्हें मुक्त किया। फिर उनके प्रार्थना करने पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया। कौरव और पांडवों की आपस में शत्रुता थी। पांडव भगवान कृष्ण के भक्त थे। कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर इनको हरा दिया। तथा सब कुछ दांव पर लगवा दिया। भरी सभा में द्रोपदी को नग्न करना चाहा लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बढाया कि स्वयं दु:शासन खींचते-२ हार गया। बन में भेज दिया, कभी लाक्षागृह में आग लगवाई, विष दिया। किन्तु प्रभु सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने। युद्ध में जब अर्जुन का मोह होगया तब उसे गीता का उपदेश दिया। जरासन्ध को भीम के द्वारा मरवा दिया। अन्त में

यावदेताभिरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् । कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२॥ योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः । धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥ एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत । सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥

अन्त में विजय पांडवों की हुई क्यों वे धर्म की लड़ाई लड़ रहे थे। हमेशा धर्म की विजय होती है। पांडवों को राज्य दिला कर प्रभु द्वारिका आगये। भगवान कृष्ण की लीला का वर्णन कहां तक किया जाए। यह लेखनी विषय नहीं है विस्तार से वर्णन श्री भागवत में है।

मानस-किंकर कौशलकिशोर दास

فتح پانڈووں ہوئی کیونکہ وہ دھرم کی لڑائی لڑ رہے تھے۔
فتح ہمیشہ دھرم کی ہُوا کرتی ہے۔ پانڈووں کو راج دلا کر
پربھو دوارکا گئے۔

مانس کنکر کوشل کشور داس

۲۵۔ درون اور بھیشم ڈٹے تھے وہاں۔ جمے تھے وہیں راجگان جہاں۔
کہا دیکھ ارجن کھڑے صف بہ صف۔ لڑائی کی خاطر کرو سر بکف
۲۶۔ تب ارجن نے دیکھا کھڑے ہیں تمام۔ چچے۔ دادے۔ استاد ذی احترام
کہیں بیٹے پوتے کہیں یار ہیں۔ برادر ہیں۔ ماموں ہیں غمخوار ہیں
۲۷۔ خسر ہے کوئی کوئی دلبند ہے۔ کہ اک سے لگا اک پیوند ہے۔
جگر سے جگر کی لڑائی ہے آج۔ کہ لڑنے کو بھائی سے بھائی ہے آج۔

विषीदन्निदमब्रवीत् । भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्

ہرے کرشنا!

کرشنہ ہیتو! ہیتو! ییکلین پوشہ زار کر!
بانسری شہ دتو دتو
دُدوئن شالمار کر
باغ نشاطِ گُل پھولن۔ گوپین دل تہ شل برمن
کرشنہ! دہانہ از ہتر
شبنمس ہوختہ بار کر
چانہ گیتہ شیامہ ژھایہ لشن صبح رنگین تہ شرمہ ہیو
سِریہ ہو کھس نیر گرتھ
حاکہ تن کرد گار کر
باغ نسیمہ عطر ژھٹھ۔ ییہ ہوایہ ور کران
پوشہ پیدن ژیہ گتہ کری
تہ تہ ہمیس امار کر

پیار ونین یمبرزلن ۔ چانہِ دیایہ کُن نظر !
کرشنہ دیالہ یوّد نہ یکھ
سوُنتہ بلن بیمار کر

ییمی نہ کر دلبری گلن ۔ ییس نہ کرُ دلبری گُلو !
درشنکی بہ مزہ تمن
پریمہ ہتی دل تیار کر

از تہ گنگایہ بھٹی بہ زہن ۔ چانہِ وعدِ یار گرِ
کل مہ رمس رمس گنن
کیاہ یمی رُم مہ تار کر

تار شکار سوال بہ سوال ۔ ہانز کھیلس نہ گرندیون
ووُنی الگر لانکہ پیٹھ ترکھ
میون دل شرمسار کر

چانہ خیالہ کنی ونم ۔ ساسہ بدی دل پسند سوخن
فاضلن تاز ترہ غزل
از ینن اشتہار کر

हरे कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकिल्यन पोशिजार कर
बांसुरी शाह दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर

बागि निशात गुल फोलन, गूपियन दिल त शिल ब्रमन
मेठि, दहान' कर सोखन, शबममस म्वक्त'हार कर

चानि ग्येशामि छायि तल. सुबहि निगीन ति शामि प्यव
सिर्यि मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर

बागि नसीम' अ'तरि छठ, आयि बेबायि वर करान
पोशि पद्यन च्य गथ करिथ, तोति हम्यस अमार कर

प्यारवन्यन य'म्बर खलन, चानि पोत छाई कुन नजर
कृष्णा' दयाल ' यो'द न यिख, सोन्त' बलन ब्यमार कर

यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरी गुलव
दर्शनक्य बर मुचर तिमन, प्रेम' रस वागुजार कर

अज ति गंगायि ब'ठ्य अछन चानि' वो'मेजि तारिक'य
कल मे रुमस रुमस गनन, क्याह यिमय रुम मे तार कर

तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' ख्यलिस न अंद यिवन
वोन्य अगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर

चानि खयाल किन्य वनिम, सासबद्य शार दिलपसन्द
फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह पनुन इश्तिहार कर



گرٕشنہٕ اچھو گژھم رنٛگ تہٕ بے رنٛگ پانٕ گوم
بے رنٛگی منٛز جانِ پرٛزٕنٲوِتھ رنٛگ سۭنیوم
پرٛیمہٕ رنٛگ پرٛٲوِتھ گژھنے رنٛگ نظرِ آم
اُتھی رنٛگس منٛز سِریہِ پرٛاگاشِ دِل بنیوم

Krishn *Leela*

کرشن لیلا

कृष्ण लीला

از:-
ڈاکٹر نظام الدین۔ پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج۔ سرینگر

کشمیر کے رسکھان

فاضل کاشمیری نے "بالک اوستھا" اور "کرشن لیلا" نامی کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سور داس، رسکھان، پرمانند، نروتم داس، رتنا کر سبھی مہیم بھارتی کی روایت کو قایم رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یک جہتی کو بڑھاوا دینے میں ہم انہیں امیر خسرو، نظیر اکبر آبادی، ساغر نظامی، بیکل اتساہی

اور نفیرؔ بنارسی وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ انہوں نے ستگورو سری باباگورو نانک کی بانی کا ترجمہ کر کے ایک عظیم کارنامہ انجام دیا ہے۔ جس کی سراہنا سکھ قوم نے کی ہے۔

فاضل کاشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیّل کی ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پُر خلوص ماحول کے تخلیقی کام میں جُٹے ہوئے ہیں۔ اُن کے اشعار میں بانسری کے میٹھے سُر تخیّلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں۔ جو کوئی اس سُر کو سنتا ہے "جے جے ہری" پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک ہو جاتا ہے، وہ بادشاہ ہو جاتا ہے۔ پھر اس میں ہندو مسلمان کی تمیز نہیں رہتی۔ فاضل صاحب کرشن جی کو گنگا کا ایسا پاون جل (پوتر پانی) تصوّر کرتے ہیں جو ہندو اور مسلمان کے دلوں کے میل کو دھو ڈالتا ہے ؎ کرشن گو لپوشہ وَن گنگا یہ ہند جل

چھلان ہیندرن مسلمانن دُلک مَل

فاضل صاحب کرشن کی بانسری پر موہت ہیں، کیونکہ اس کا سُر پریم آتما ہے۔ جلوۂ روشنی حیات ہے اور ساز دلبری ہے۔

مرلی دھر کرشن اس میں پھونک مار کر گیان و عرفان کے ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے، جس سے اطراف عالم میں کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتار ایشور اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کئے جاتے ہیں۔ اور رحمان و بھگوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضل صاحب کرشن کے رنگ و روپ پر موہت ہیں انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پھولوں میں رنگ و بو کرشن کی بدولت ہے اور انہیں کے دم قدم سے یہ سنسار ایک حسین گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضل صاحب کی یہ کتاب "کرشن لیلا" بھارتیہ کرشن کاویہ میں ایک گرانقدر اضافہ ہے اس سے قومی ایکتا پر اعتقاد رکھنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے۔

نظام الدین

(DR. NIZAM-UD-DIN)
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

ترجمہ:- پرتھوی ناتھ کول سائل کشمیری۔

دکھشنایَن ہینے کے درمیان جو کہ آٹھویں کرشن پکھش کے کالے پَندرہ واڑے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں موت کے کالے سائے منڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں مُتبرک ساعت پر ایک سیاہ فام بچّے، کرشن نے جَنم لیا۔

گیتاجی کی بھاشا کی روشنی میں "کرشن" کے معنیٰ "کالے" کے ہیں جس کی مناسبت کرشن پکھش کے تاریک پندرہ واڑے کے ساتھ ہے۔ یہ وہ سمَے تھا جب جگت کے تمام رہنے والے لوگوں میں ناسمجھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا۔۔۔۔ اَندھکار کے اس دور میں کرشن جیسے روشن ضمیر رہنما کے وجود کی اشد ضرورت تھی جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اِسی ذات نے کالے کرتوت والے منشوں کو روشنی بخش کر مکتی کا راستہ دکھایا۔ اُنہیں گیتاجی کے درس سے برہمانڈ کی اَصلیت اور مایا کی ماہیت سے واقف کیا۔

بھگوان ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود جیسے مکھن چوری، گائے پالک، مرلی منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے ہملے

کرشن کے مرلی منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیارے



بھگوان کرشن جی مرلی بجاتے تھے تو اس میں سے شانتی اور سکون کے لہرے پیدا ہوتے تھے جن سے سننے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔ کرشن جی سیکیولرازم کے اولین پرچارک تھے۔ انہوں نے لوگوں کو بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زہریلے سانپوں اور



رہزنوں کو بھی قابو کرلیا اور اُن کا سُدھار کیا۔



کرشن جی دھرم کے محافظ، سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔ انھوں نے انسان کو دُنیائی جھنجھٹوں سے آزاد کردیا۔ وہ ہمہ دان اور حق پرست تھے۔ وہ پانڈووں کے دوست اور پُشت پناہ تھے۔ انہوں نے ظُلم و تشدّد، جلعسازی اور دغابازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے اُکھاڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہابھارت میں ملتا ہے۔

ہمارے فاضل صاحب ایک کرشن بھگت ہیں۔ رسالہ "دھرم یگ" کے تنظیمی ادارہ نے اُنہیں "کشمیر کا رسکھان" کا خطاب دیا ہے۔ کیونکہ اُنہوں نے رسکھان کی طرح کرشن بھگتی کا بھرپور اظہار اپنے شبدوں میں ہمارے سامنے پیش کیا ہے۔ اُنہوں نے کرشن کے بچپن، جوانی اور دیرینہ سالی کے سُندر مُرقعے سجائے ہیں۔ اُن کی کتاب "کرشن لیلا" کی لیلاؤں میں ترنّم، تاثیر اور گُداز ہے۔ اُن کے اِس عظیم کام سے سوشلزم اور قومی یکتا کے میدان میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دُعا ہے کہ یشودھا کا بالک کرشن جو دائیں ہاتھ میں حلوا، بائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا گلے میں زرق برق جواہرات کا ہار، شیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو ابدی مُسرّت عطا کرے!

30-8-83

(ڈاکٹر جگت موہنی)

کشمیری علم و ادب اور قومی یکتا کے کاز کو بڑھاوا دینے کے سلسلہ میں فاضل کاشمیری نے "شری جپ جی صاحب" اور "سلوک مہلہ نواں" اور "ستھ رنگ" کے بعد اس بار اپنی "کرشن لیلاؤں" کا یہ حسین گلدستہ "بالک اوستھا" عوام کے بہبود کے لئے منظرِ عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے، جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے امید ہے کہ اس دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی وسعت میں دور رس نتایج بر آمد ہونگے۔

علی محمد لنکر

علی محمد لنکر

سرینگر کشمیر

۱۹ نومبر ۱۹۸۳ء

PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalnagar, P. O. Natipur
Srinagar (Kashmir) 190 015

از : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیلاؤں سے سب کو یکساں طور پر اپنی طرف کشش کی ہے۔ اُن کا بال رُوپ سُورداس اور رس خان جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گیا ہے۔ اِن دو شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق واتسلیہ رس یعنی شفقتِ مادری کا جذبہ) سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب کو امر بنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کاشمیری ایک ایسی شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں اُن تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے ہیں۔ فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذاہب کی بُنیادی وحدت کو سمجھ کر

اپنی سُریلی زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پرچار کرتے ہیں۔ وہ پرم ہنس رام کرشن مہاراج کے سرو دھرم سمنوئے (Harmony of religions) کو آج کے دور کے مسائل کا واحد حل تصوّر کرتے ہیں۔ وہ گیتا جی، مقدّس انجیل، قرآن شریف اور سری گورو گرنتھ صاحب میں ایک ہی پیغام کی مختلف صورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو مَیں نے دھارمک محفلوں اپنی کرشن لیلائیں سُناتے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے ایک پُر کیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست، روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجّہ ہے جسے پڑھنے والے اور سُننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی سے سمجھ کر بھرپور حظ اُٹھاتے ہیں۔

اِس بار فاضل صاحب نے بالک اوستھا کی کتابت و تزئین اپنے من چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصّہ ہے۔

چمن لال سپرو

25-1-1984

25.1.84

Fazil Kashmiri is, I have understood, unparalled devotee of Lord Krishna. Although he is born muslim, but he is no longer now muslim in a strict theological sense, or Pandit. He is actually established in that state of divine devotion of Lord that has risen in that state where he has gone above limitation of caste creed and colour. He is just devotee of Lord Krishna. I hope this

अध्याय १६

श्रीभगवानुवाच अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थिति

दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता । भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥

book 'Krishen Leela' will illumine the whole world.

I hope that each & every human being should and must own this valuable book, so that they also rise to that state of Divine oneness where limitation of caste and creed are not recognised.

6-11-83. Lakshman joo
Guptaganga

(شیو آچاریہ سوامی لکشمن جو مہاراج - گپت گنگا سرینگر)

शैवाचार्य स्वामी लक्ष्मण जो महाराज

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥
दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے بانیوں اور پرستاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں، جس کے آئینہ میں اُن کی "انوارِ محمدی"، "شری جپ جی صاحب" اور "کرشن لیلا" جیسی گرانقدر تصانیف پیش کی جا سکتی ہیں۔

زیرِ نظر اُن کی تصنیف "کرشن لیلا" اُن کی کرشن بھگتی کی تصویر ہے۔ فاضل مصنّف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج پر سُندر نظمیں لکھی ہیں۔ انہیں سُنکر اور پڑھ کر سامعین اور قارئین رُوحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں، خالصہ درباروں اور دھا اتسوؤں میں حاضرین اُنہیں اپنا کلام سُنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور اُن کی قدردانی کرتے ہیں۔

فاضل صاحب کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

۲۶ فروری سنہ ۱۹۸۴ء

(دستخط)
میلارام نیجہوان ... گوجر باغ

कृष्ण-लीला

Krishna Leela

This Beautiful Book

of the Personality of

Kṛishṇa

provides the key to how humanity can become united in peace, prosperity and friendship around a common cause.

Printed at Hind Samachar Printing Press,
Pacca Bagh, Jalandhar City.



KRISHNA LEELA